राज
कॉमिक्स
संख्या 0179
महामानव
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
सुपरकमांडो
ध्रुव
संस्थापक
श्रद्धांजलि
वर्ष 2021

महामानव

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादक: मनीष चन्द्र गुप्त

मनुष्य अपने अधिक विकसित *दिमाग* के कारण ही पृथ्वी का सबसे श्रेष्ठ जीव है। लेकिन यह विकास अभी रुका नहीं है। समय के साथ-साथ मनुष्य का दिमाग और भी विकसित होता जा रहा है।

और इसी विकास की अंतिम सीढ़ी है- *महामानव*! जो अपनी मानसिक शक्तियों से मौसम को बदल सकता है, तारों को हिला सकता है, और किसी के भी दिमाग को अपने कब्जे में ले सकता है।

इस वक्त तुम्हारा दिमाग मेरे वश में है, लड़के! और बिना मेरी इजाजत के तुम पलकें तक नहीं झपका सकते हो।

ओह! यह सच कह रहा है। मेरा पूरा बदन *जड़* हो गया है। आज मेरा दिमाग मेरा ही कहना नहीं मान रहा है।

संसार का सबसे वीरान इलाका अगर कोई है, तो वह है उत्तरी ध्रुव का बर्फीला इलाका। लेकिन अब यहां की अनछुई बर्फ पर भी मानव के पैरों की छाप पड़ने लगी है–
और इन पैरों में भारतीय पैर भी शामिल हैं–
हमारे नए स्टेशन के लिए यह स्थान कैसा है, नारायणन?
बहुत अच्छा! यह स्थान थोड़ी ऊंचाई पर भी है, कैप्टेन सिंह!
इससे हमको दूर-दूर तक सर्वेक्षण करने में काफी आसानी रहेगी।
लेकिन यह देखिए, कैप्टेन!

यह तो ग्रेफाइट है। यानि ज्वालामुखी का जमा हुआ लावा।
हां, सर! मेरा ख्याल है कि इस समय हम एक मृत ज्वालामुखी के ऊपर खड़े हैं।

तुम ठीक कह रहे हो, राघव! लेकिन यह ज्वालामुखी अब मर चुका है।
दुबारा इसके फट पड़ने की संभावना शून्य है।
हम अपना स्टेशन यहीं पर बनाएंगे।

और शीघ्र ही - ऐसीटिलीन टॉर्चों की तेज गर्मी बर्फ को तेजी से पिघलाने लगी–
बर्फ की कठोर सतह पर लोहे के गर्डर गाड़ने के लिए गड्ढे बनने लगे।

और तभी - पूरी जमीन हिल उठी–
य... यह क्या?
भूकम्प... त...तो नहीं आ रहा है?

लेकिन आने वाली मुसीबत भूकम्प जितनी मामूली नहीं थी–
इस मुसीबत का एक सिर था।

- और साथ में पूरा शरीर भी -

हे भगवान! अब तू ही रक्षा करना। लेकिन ··· लेकिन, कैप्टेन सिंह···

य···यह तो एक मांसाहारी डायनासौर है। टाइरेनोसॉरस रेक्स!! ले···लेकिन यह यहां···? राघव, तुरंत संदेश भारत भेजो।

भूख शांत हो जाने के बाद भयानक डायनासौर एक तरफ बढ़ा –
- और दो पैरों के पास पहुंचकर पालतू कुत्ते की तरह शांत हो गया।
और वहां से हजारों कि॰मी॰ दूर - राजनगर के कमांडो हैडक्वार्टर में -
कैप्टेन! हमारे ट्रांसमीटर पर कोई अजीब सा संदेश आ रहा है।
क्या?
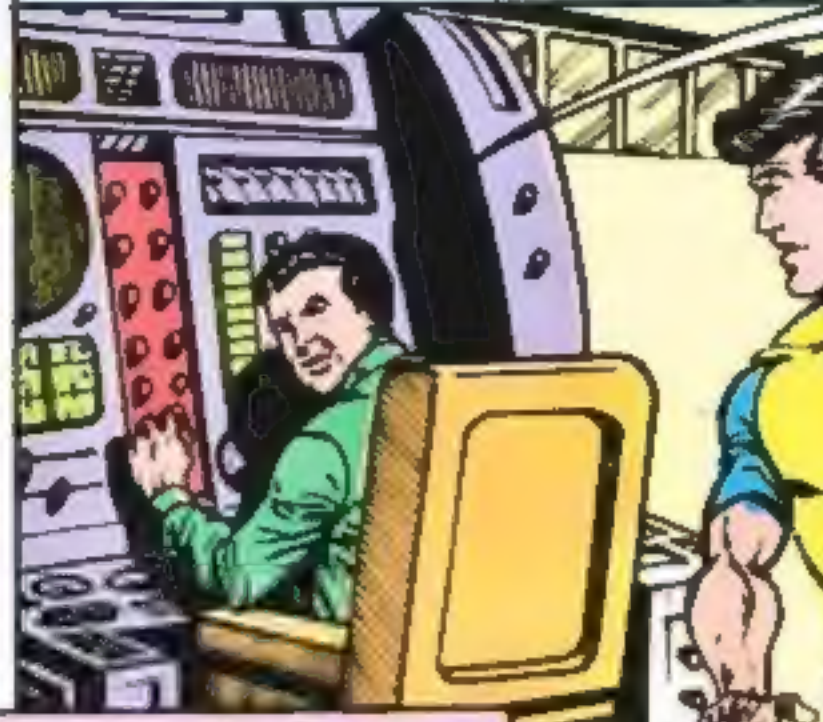
सुनो! हमारा ऑटोमेटिक टेपरिकार्डर संदेश दुबारा सुना रहा है।
हैलो, इंडिया! हैडक्वार्टर नार्थ-पोल मिशन। हमने यहां पर एक डायनासौर... आह!... धड़ाक!
डायनासौर? और आज के युग में? इस का क्या मतलब हो सकता है?
ज्यादा माथापच्ची की जरूरत नहीं है, करीम!
'नार्थ-पोल मिशन' के हैडक्वार्टर पहुंचकर सब एक मिनट में समझ आ जाएगा।

और वैसे भी उन तक यह मैसेज तुरंत पहुंचाना बहुत आवश्यक है।
और लगभग आधे घंटे बाद –
हैलो, इंडिया! हैडक्वार्टर 'नार्थ-पोल मिशन!'
HEAD-QUARTER
NORTH POLE MISSION
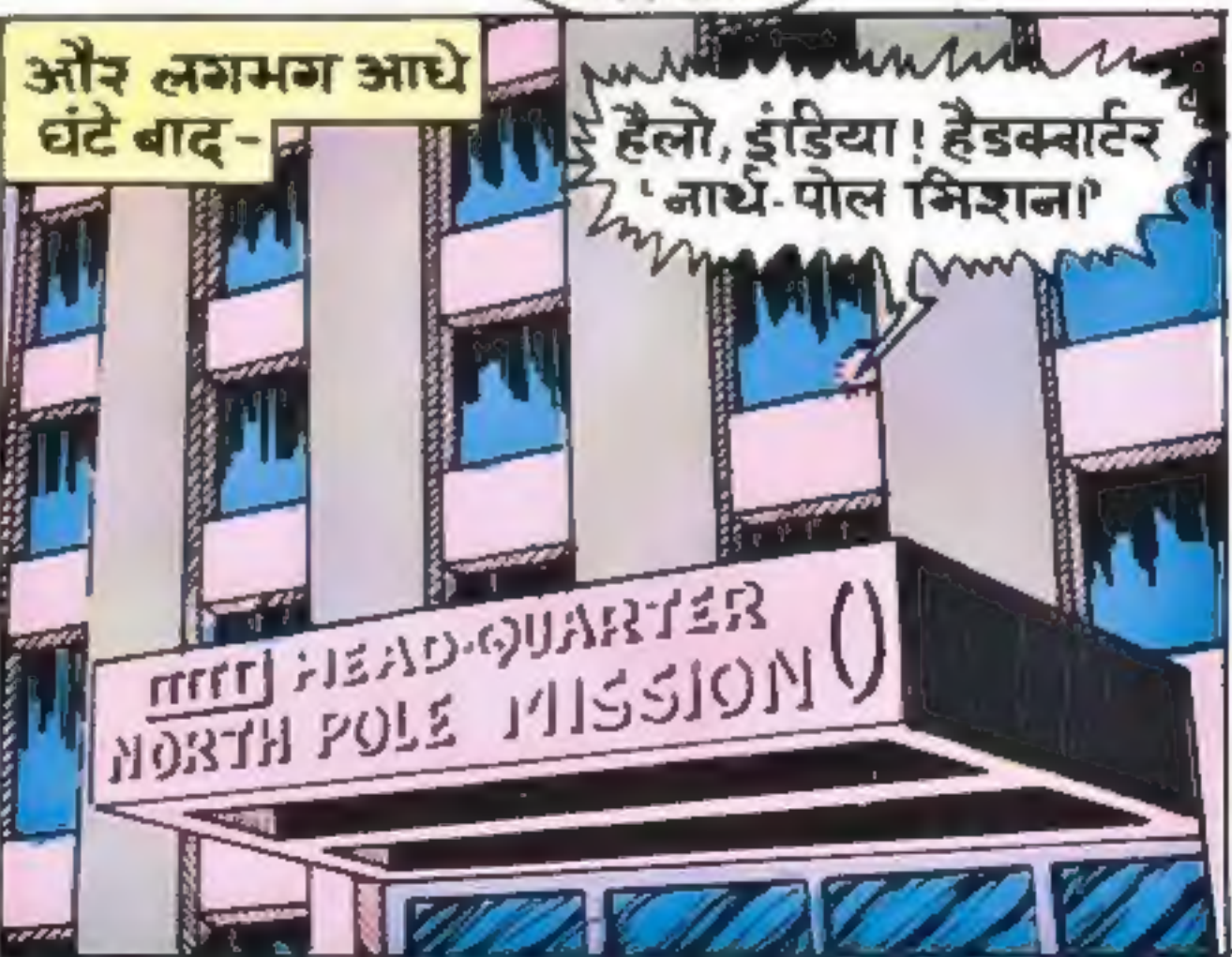
हमने यहां पर एक डायनासौर... आह!
बस! हमारे ट्रांसमीटर ने इतना ही संदेश ग्रहण किया है, सर!
यह संदेश तो हमारे ट्रांसमीटर पर भी आया है।
DIRECTOR

और यह हमारे 'नार्थ-पोल मिशन' के रेडियोमैन राघव की आवाज है। लेकिन इस संदेश का क्या मतलब हो सकता है?
डायनासौर और इस युग में!?
यह तो असंभव है।

बात तो सही है, सर! जहां तक मैं जानता हूं, डायनासौर आज से 150 करोड़ साल पहले इस पृथ्वी पर पाए जाते थे।
हां। और वे सारे के सारे अचानक ही खत्म हो गए।
क्यों और कैसे, यह कोई नहीं जानता।

इस संदेश से यह भी साफ है कि हमारा पूरा अभियान-दल किसी भयानक विपत्ति में घिरा हुआ है। उनको तुरंत मदद पहुंचानी बहुत जरूरी है।
...और किसी भी सहायता दल को तैयार करने में वक्त लगेगा।
सर, अगर आप इजाजत दें तो मैं...

मैं तुमसे यही कहना चाहता था, ध्रुव! पर यह जानते हुए भी कि वहां पर जान का खतरा हो सकता है, तुम जाने को तैयार हो?
सर, मैं सिर्फ उन जगहों पर ही जाना पसंद करता हूं,...
...जहां पर जान का खतरा हो।

और किसी जगह पर मेरा क्या काम?
मैं जानता हूं, ध्रुव, कि अगर कोई यह काम कर सकता है, तो वह तुम हो!...
...मेरे साथ आओ।
... मैं तुम्हारे लिए तुरंत एक 'रिलीफ-प्लेन' का इंतजाम करता हूं।

और शीघ्र ही- ध्रुव अपने फर्ज को निभाने के लिए पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव की तरफ बढ़ चला-

जहां पर दूर-दूर तक बर्फ के ठंडे सन्नाटे के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था-
डायरेक्टर साहब के अनुसार तो अभियान-दल को यहीं कहीं होना चाहिए।
हां! वे रहे उनके उपकरण।
मुझे भी प्लेन को यहीं उतारना चाहिए।

लेकिन ध्रुव को प्लेन उतारने की मेहनत नहीं करनी पड़ी-
य...यह क्या?
मुझे तो अपनी आंखों पर यकीन नहीं हो रहा है।

ध्रुव ने बड़ी मुश्किल से रिलीफ-प्लेन को डायनासोर के बढ़ते जबड़े से बचाया-
लेकिन डायनासोर की पूंछ पर उसका ध्यान नहीं था-

हवाई-जहाज के पीछे एक जबरदस्त टक्कर लगी-

हवाई-जहाज कुछ क्षणों के लिए ध्रुव के नियंत्रण से बाहर हो गया-

लेकिन उसने शीघ्र ही प्लेन पर काबू पा लिया-
इस पर तो पिस्तौल की गोलियों का भी कोई असर नहीं होगा।
मैं इस दुर्लभ जीव को खत्म करना तो नहीं चाहता।…
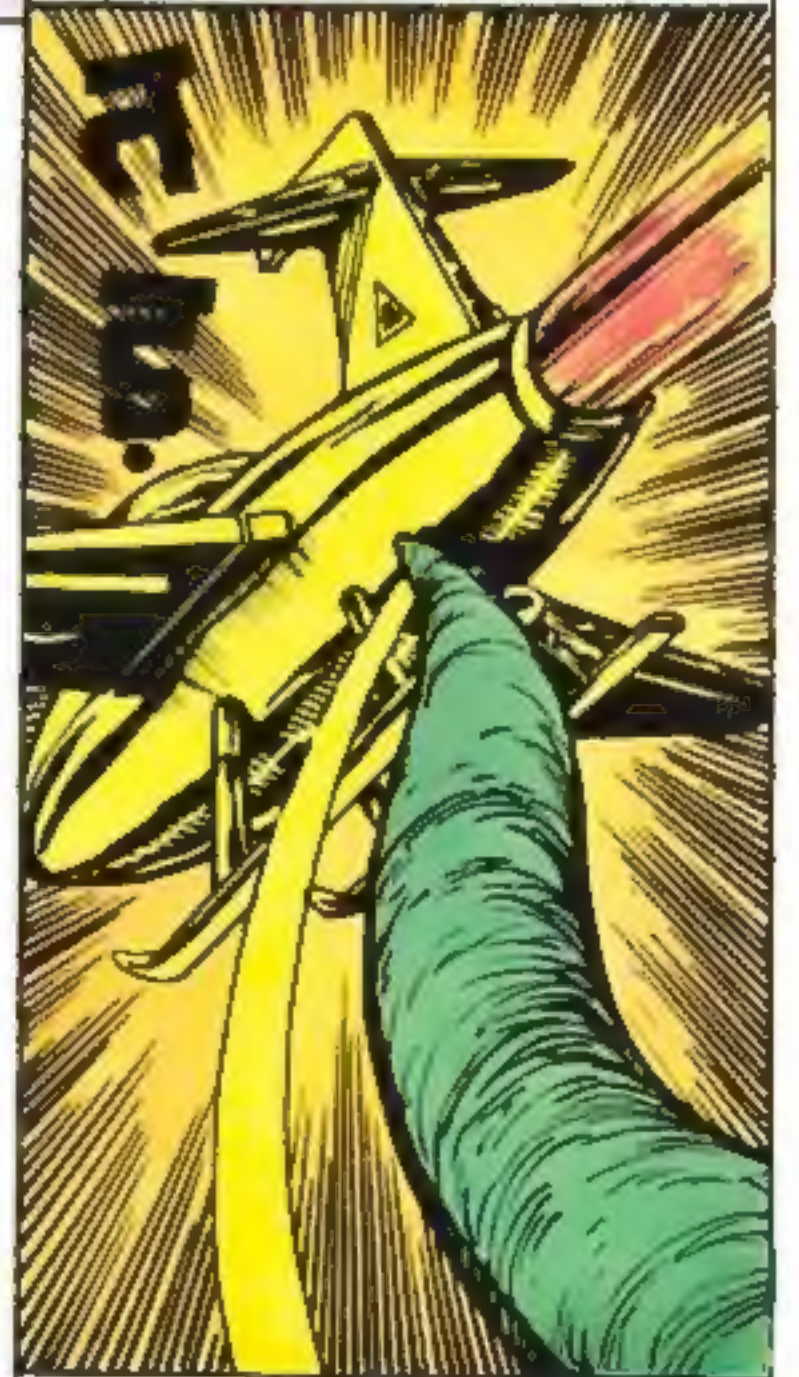
लेकिन बिना इसको खत्म किए, मैं अभियान दल की तलाश करने के लिए उतर भी तो नहीं सकता।
ध्रुव ने रिलीफ-प्लेन का रुख सीधे डायनासौर की तरफ मोड़ दिया।

'रिलीफ-प्लेन' तेजी से डायनासौर की तरफ बढ़ा-
और उसी क्षण ध्रुव प्लेन से बाहर कूद पड़ा।
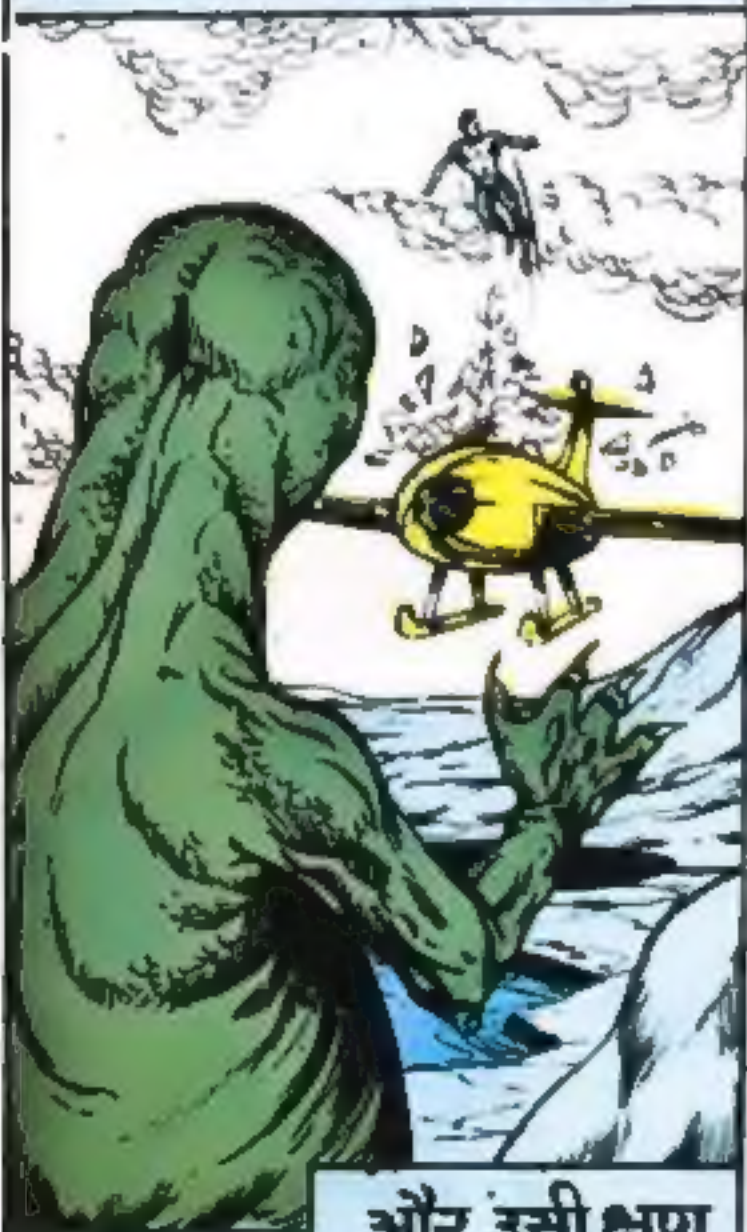
लेकिन न जाने कैसे-डायनासौर तक पहुंचने से पहले ही-
प्लेन के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

अब ध्रुव के सामने साक्षात मौत खड़ी थी-
और उससे बचने का शायद कोई रास्ता भी नहीं था।

लेकिन ध्रुव ने बड़ी मुश्किल से अपने होशोहवास कायम रखे–
अब मुझको सिर्फ लोहे का यह रस्सा ही बचा सकता है।...

जिसका प्रयोग शायद यहां पर स्टेशन बनाने में किया जाने वाला था।
लेकिन अब यह मेरी जान बचाने में काम आएगा।
ध्रुव की शक्तिशाली बांहों ने लोहे के रस्से को डायनासौर की गर्दन तक उछाल दिया।
और फिर रस्से के दूसरे छोर को पकड़कर ध्रुव का बदन हवा में उछला–

उसका सर्कस में सधा हुआ शरीर फिरकी की तरह हवा में घूमने लगा–

और भयानक डायनासौर टाइरेनोसॉरस की गर्दन एक मजबूत शिकंजे में कसने लगी–
उसका दम घुटने लगा।

आखिरकार उसके कांपते पैरों ने भी उसका साथ छोड़ दिया–

और डायनासौर का विशाल शरीर, एक कटे हुए वृक्ष की तरह बर्फ पर आ गिरा–
लगता है कि यह बेहोश हो गया।
मेरी योजना सफल रही।
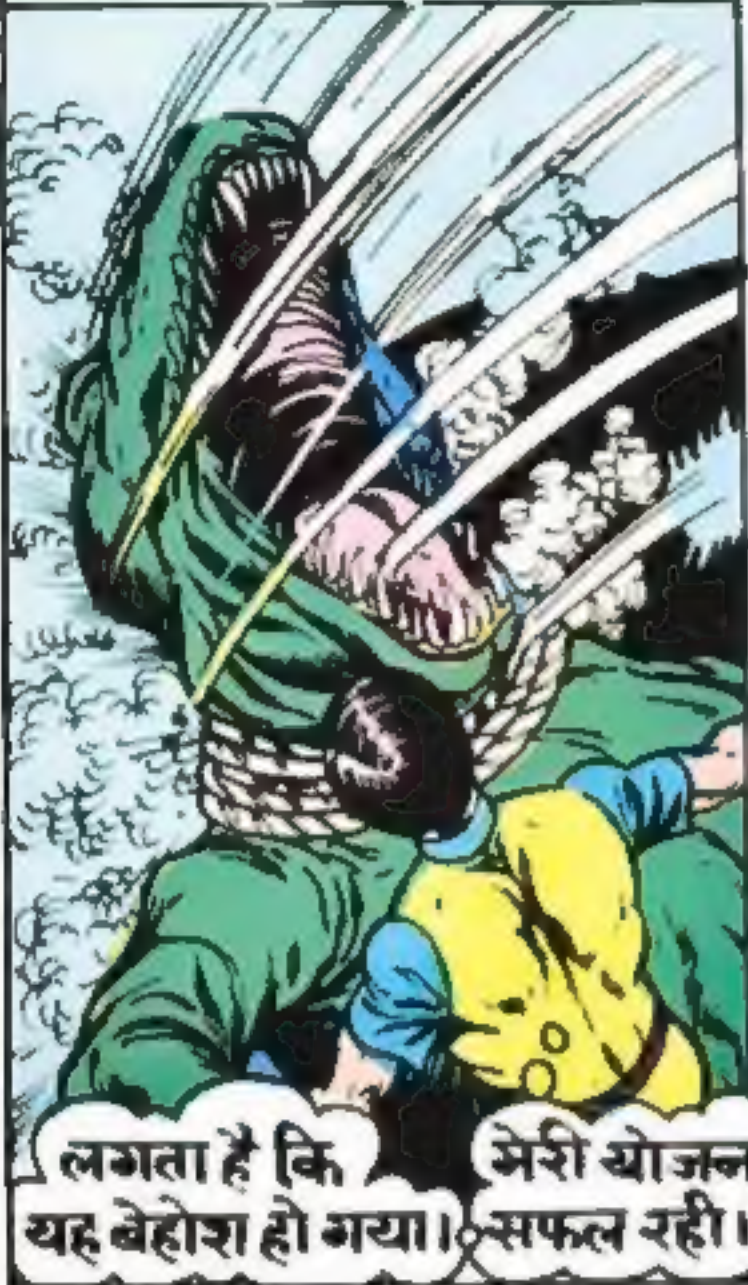
इससे पहले कि यह बदसूरत होश में आए, मुझे इसको बांध देना चाहिए।

और तभी–
शाबास, मानव! आज तुमने मुझे वह दृश्य दिखाया, जो मैं कभी सोच भी नहीं सकता था।
यह क्या!? ऐसा... ऐसा लगता है मानो कोई मेरे दिमाग के अंदर से बोल रहा हो।

तुमको ठीक महसूस हो रहा है, मानव! तुम इसको टेलीपैथी या 'मानसिक-सम्पर्क' कहते हो। अपने पीछे मुड़कर देखो।
ध्रुव मुड़ा।

और वह आश्चर्य से जड़ हो गया–
तु..तुम कौन हो?
आप बोलो, मानव! अपने से बड़ों की इज्जत करना सीखो।
खास तौर से उसकी...
...जो तुमसे लगभग दो सौ करोड़ साल बड़ा है।
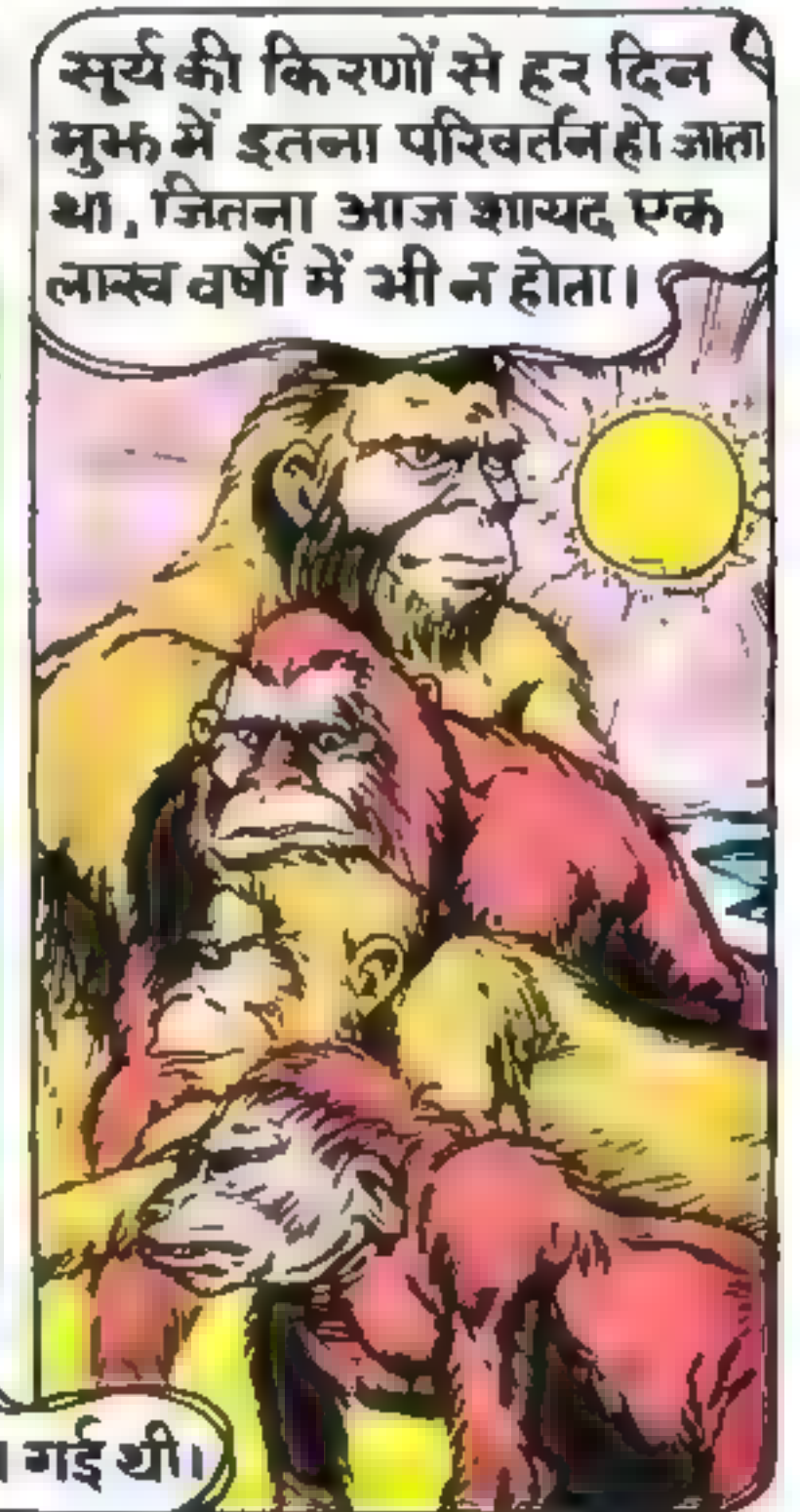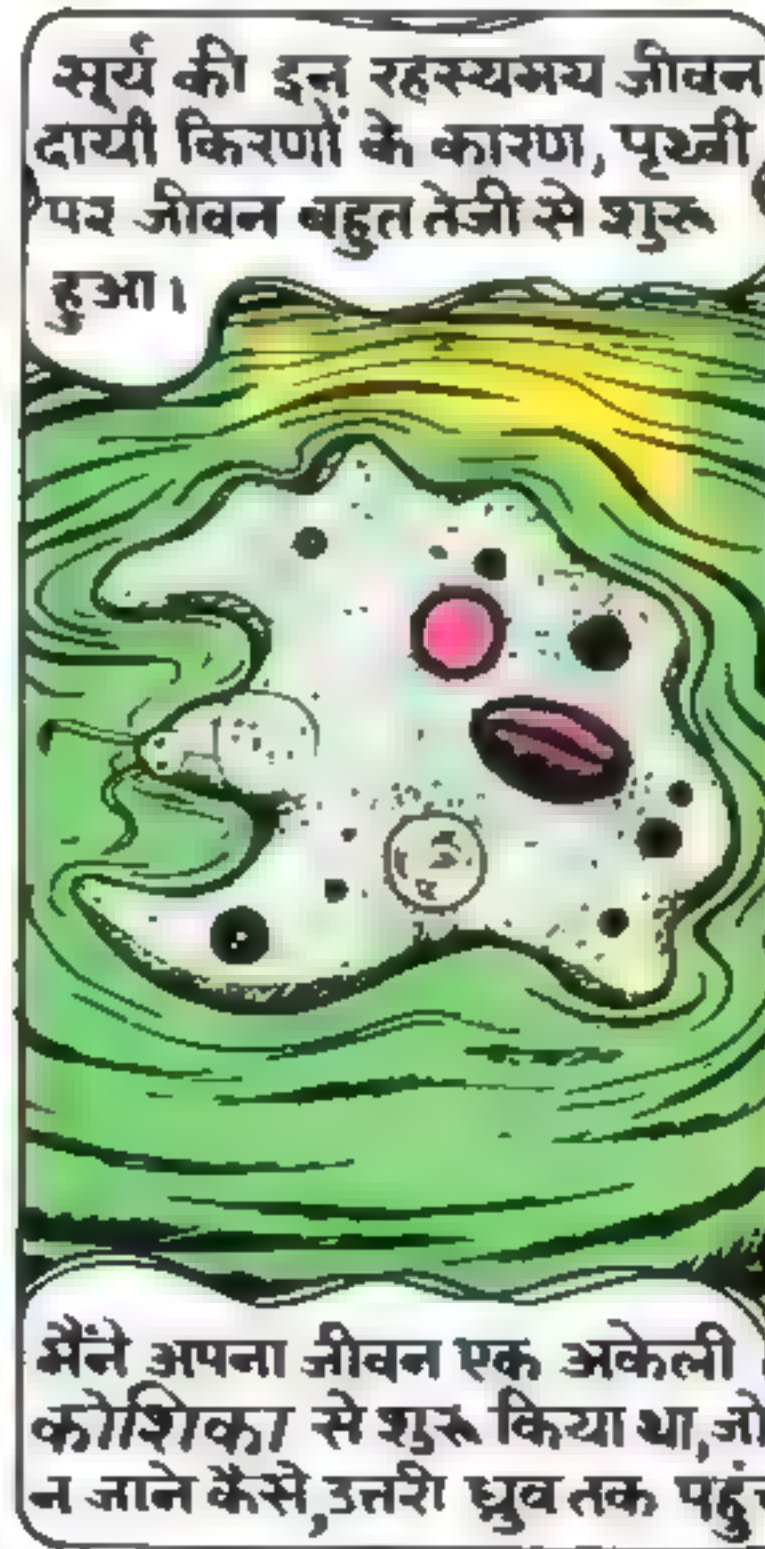
द..दो सौ करोड़ साल!!?
आश्चर्य मत करो। मैं मनुष्य का भविष्य हूं।
मनुष्य आज से करोड़ों साल बाद मुझ जैसा ही दिखेगा।
लेकिन तुम... मेरा मतलब आप यहां कैसे आए? ...यानि आप समझे न?
हां! लेकिन मैं तो यहां पर हमेशा से था। आए तो तुम मानव हो।

वैसे मेरे जन्म की बात बहुत पुरानी है। अब तो ठीक से याद भी नहीं है। लेकिन इतना याद है कि उस वक्त पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत हुई ही थी।
सारे महाद्वीप एक साथ जुड़े हुए थे। यानि कि सारी जमीन एक ही स्थान पर थी।

सूर्य उस वक्त, आज की तुलना में, दुगुनी तेजी से चमकता था। पृथ्वी पर वायुमंडल भी बहुत पतला था। इसी कारण सूर्य की जीवनदायी किरणें पृथ्वी तक पूरी तरह से पहुंचती थीं।

सूर्य की इन रहस्यमय जीवनदायी किरणों के कारण, पृथ्वी पर जीवन बहुत तेजी से शुरू हुआ।
मैंने अपना जीवन एक अकेली कोशिका से शुरू किया था, जो न जाने कैसे, उत्तरी ध्रुव तक पहुंच गई थी।

सूर्य की किरणों से हर दिन मुझ में इतना परिवर्तन हो जाता था, जितना आज शायद एक लाख वर्षों में भी न होता।

लेकिन, चूंकि मेरा विकास बर्फीले प्रदेश में हो रहा था, इसीलिए मुझसे जरा सी भी गर्मी बर्दाश्त नहीं होती थी। गर्मी मेरे दिमाग पर बेहोशी का असर कर देती है।

इसीलिए मुझे पृथ्वी के गर्म प्रदेशों में विकसित हो रहे प्राणियों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

चूंकि सारे डायनासौर गर्म प्रदेश के प्राणी थे, इसीलिए उनसे ठंड सहन नहीं होती थी।
मैंने अपनी मानसिक तरंगों को केंद्रित किया। और पूरी पृथ्वी धीरे-धीरे बर्फ से ढकने लगी।
यह सोचकर मैंने अपनी मानसिक तरंगों की मदद से पूरी पृथ्वी को बर्फ से ढकने की योजना बनाई।

डायनासौर बिलबिला कर इधर-उधर भागने लगे।
लेकिन वे जहां पर भी जाते, उनको बर्फ ही बर्फ मिलती।

वे सब कीड़ों की तरह एक-एक कर के मरने लगे। और आखिरकार, पृथ्वी साफ हो गई।
मैं जानता हूं। इस युग को हम लोग 'हिम-युग' या 'आइस-एज' कहते हैं।

तभी, एक दिन मुझको बर्फ में दबा एक गोला दिखाई पड़ा। मुझमें यह जानने की उत्सुकता हुई कि यह क्या है? मैंने उसे उठा लिया।
लेकिन फिर क्या हुआ?

और यहीं मुझसे गलती हो गई। वह गोला वास्तव में एक टाईरेनोसोरस का अंडा था, जो न जाने कैसे जिंदा बच गया था।
?
-और भटकते-भटकते उत्तरी ध्रुव तक आ पहुंचा था।

लेकिन बेहोश होते-होते भी मैंने अपने आपको मानसिक तरंगों के गोले में ढक लिया। इस पूरी घटना के दौरान वह अंडा मेरे हाथ में ही था।

और फिर मैं करोड़ों साल के लिए सो गया। इस दौरान यह अंडा भी फूट गया और *डायनासोर* अपनी नींद में ही बढ़ता गया।

हे भगवान! और तुमने उन लोगों को बचाने की कोशिश तक नहीं की?
क्या जब कोई छिपकली, कीड़े को खा रही होती है, तब तुम उसे बचाने की कोशिश करते हो?

यानि तुम्हारी नजर में हम मानव कीड़े हैं? याद रखो कि तुम भी मानव ही थे।
तुम मानव भी तो कभी बंदर थे...
...लेकिन फिर भी तुम लोग बंदरों को मारने में कोई बुराई नहीं समझते।

अरे... अच्छा रहने दो! बस यह बताओ कि तुम्हारे जैसा तीव्र विकास सिर्फ उत्तरी ध्रुव पर ही क्यों हुआ?
पृथ्वी के अन्य भागों में ये विकास धीरे क्यों हुआ?

क्योंकि उत्तरी ध्रुव पर पूरे छः महीने तक दिन रहता है, मूर्ख! और उस वक्त, सूर्य की लगातार छः महीने तक पड़ने वाली किरणें, विकास की गति को लाख गुना बढ़ा देती थीं।
इसीलिए मेरा विकास इतनी तेजी से हुआ।

लेकिन मेरी बेहोशी के दौरान पृथ्वी पर पेड़-पौधे तेजी से बढ़ने लगे। तरह-तरह की गैसें वायुमंडल में शामिल होने लगीं। वायुमंडल घना होने लगा।
और अब तो हालत यह हो गई है कि सूर्य की उन जीवनदायी किरणों का 99 प्रतिशत भाग तो वायुमंडल के पार आ ही नहीं पाता है।

इसीलिए आज मनुष्य का विकास बहुत धीरे हो रहा है। पर अब मैं आ गया हूं तो मानव, मानवों को चिंता की आवश्यकता नहीं है।
मैं अपनी मानसिक शक्तियों से वायुमंडल को फिर से इतना हल्का कर दूंगा कि पृथ्वी पर सूर्य की किरणें फिर से पूरी तरह से आ सकें।

ताकि विकास की गति फिर से तेज हो सके।
लेकिन इससे तो हम मनुष्य दम घुटकर मर जाएंगे।
मर जाने दो। जो भी प्रगति की राह में रोड़े अटकाएगा, उसे मरना ही पड़ेगा। पर एक बात बताओ।
मैंने अब तक जो कुछ देखा है, उससे तो यही पता लगता है कि मनुष्य ज्यादा ठंड नहीं सह सकते हैं। लेकिन तुम इतनी ठंड में बिना किसी गर्म कपड़े के कैसे खड़े हो?
यह मेरी बहन श्वेता द्वारा बनाए गए, एक इलेक्ट्रॉनिक यंत्र का कमाल है।
लेकिन यह बात तो तुम मेरे दिमाग में पढ़ सकते थे!!
नहीं! मैं सिर्फ वही विचार पढ़ सकता हूं, जो तुम सोचते हो।
चूंकि इस वक्त तुम यह बात नहीं सोच रहे थे, इसीलिए मैं यह नहीं पढ़ पाया। लेकिन बस।
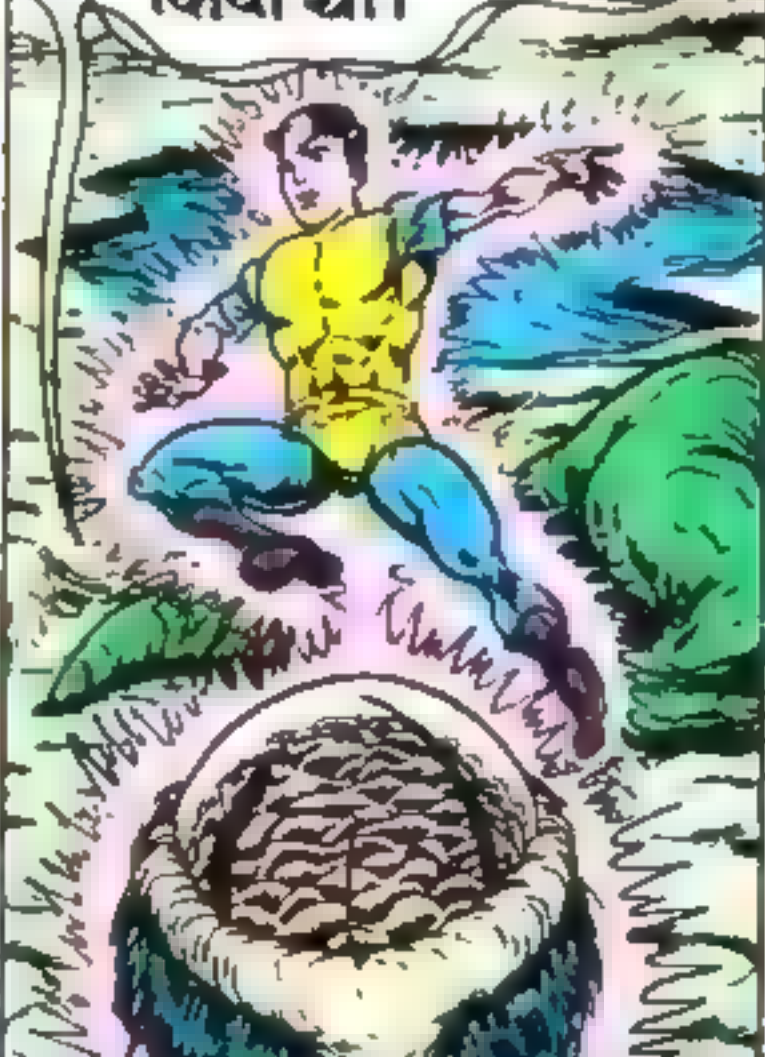
अब बातें बहुत हो गईं। मेरी *मानसिक तरंगों* ने पृथ्वी का चप्पा-चप्पा छान लिया है। अब मैं तुमको वहां भेजता हूं, जहां से पूरी पृथ्वी को मेरे *जागने* की सूचना मिल जाएगी।

लेकिन कैसे? मेरा हवाई-जहाज तो नष्ट हो गया है।

मैं तुमको इन *मानसिक तरंगों* द्वारा ही भेजूंगा, जिन से मैंने तुम्हारा यान नष्ट किया था।
और अगले ही पल - ध्रुव को अपने जीवन का सबसे आश्चर्यजनक अनुभव हुआ।
इसके पहले कि वह कुछ समझ पाता, उसने अपने आप को समुद्र के ऊपर उड़ता हुआ पाया।
?
!!!!!
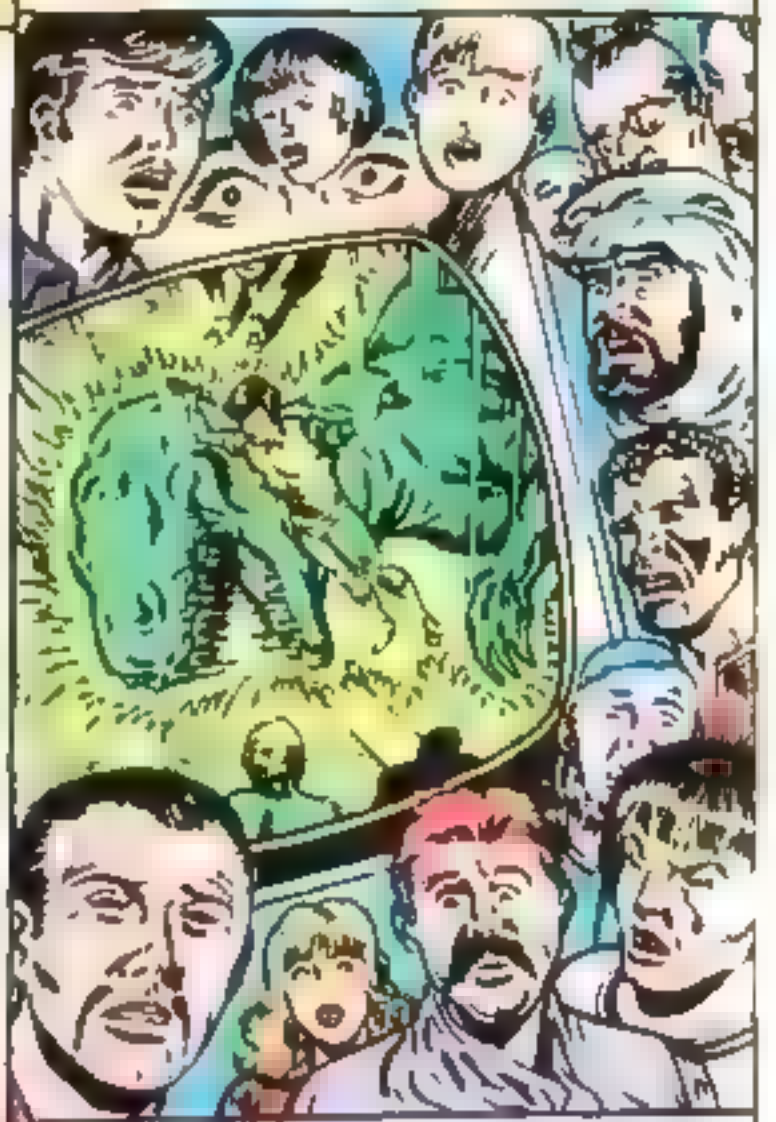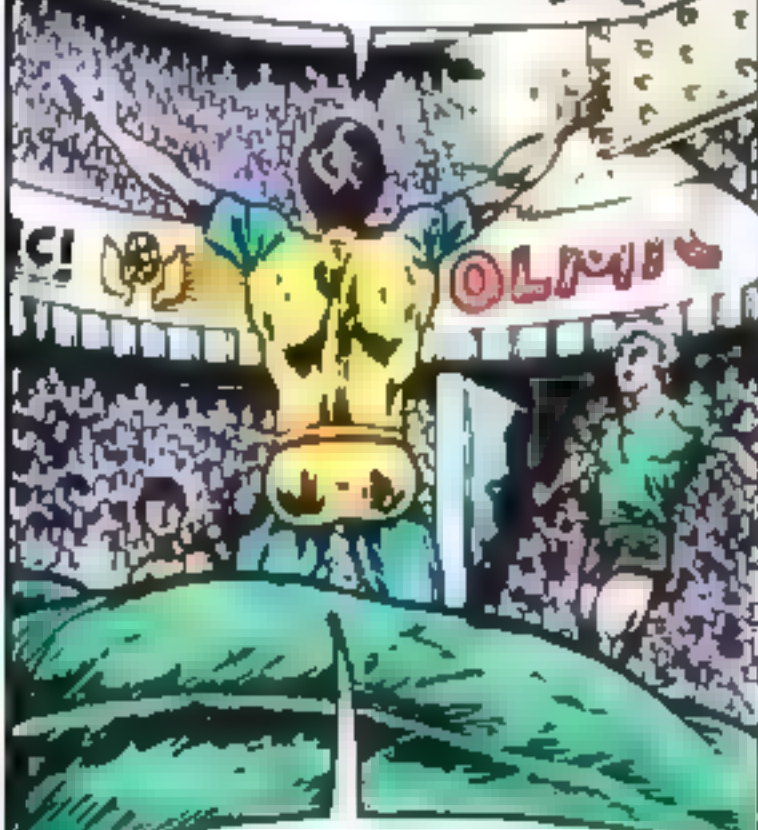
और ध्रुव की पूरी बात सुनते ही पूरी दुनिया हरकत में आ गई।

उस लड़के की बात सही है, सर! हमारे सेटेलाइटों से ली गई फोटो उसकी बात की पुष्टि करती हैं।
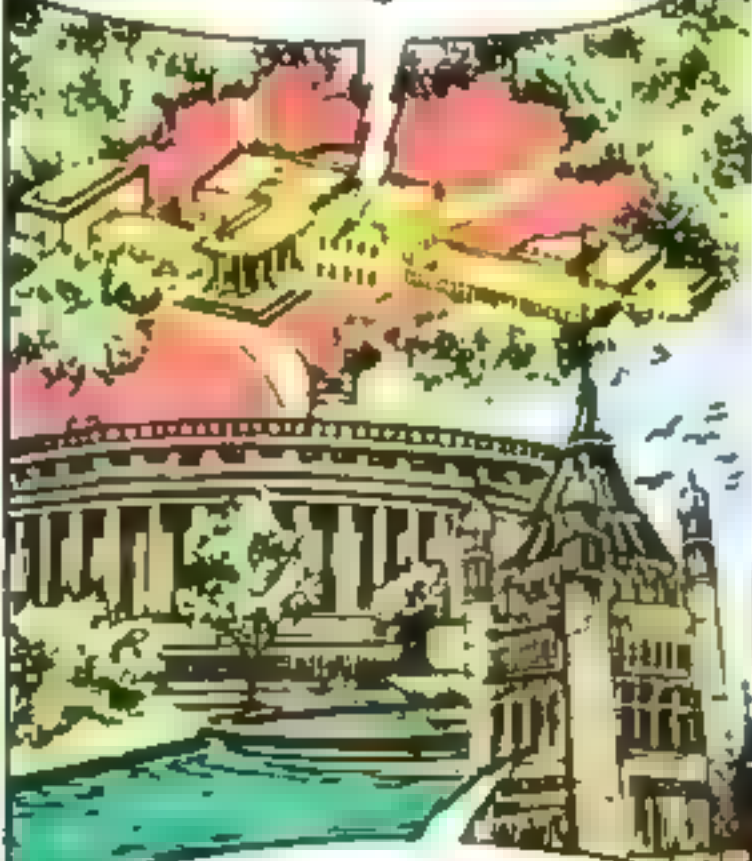
डायनासौर को देखने के बाद और किसी छानबीन की जरूरत ही नहीं है, सर!
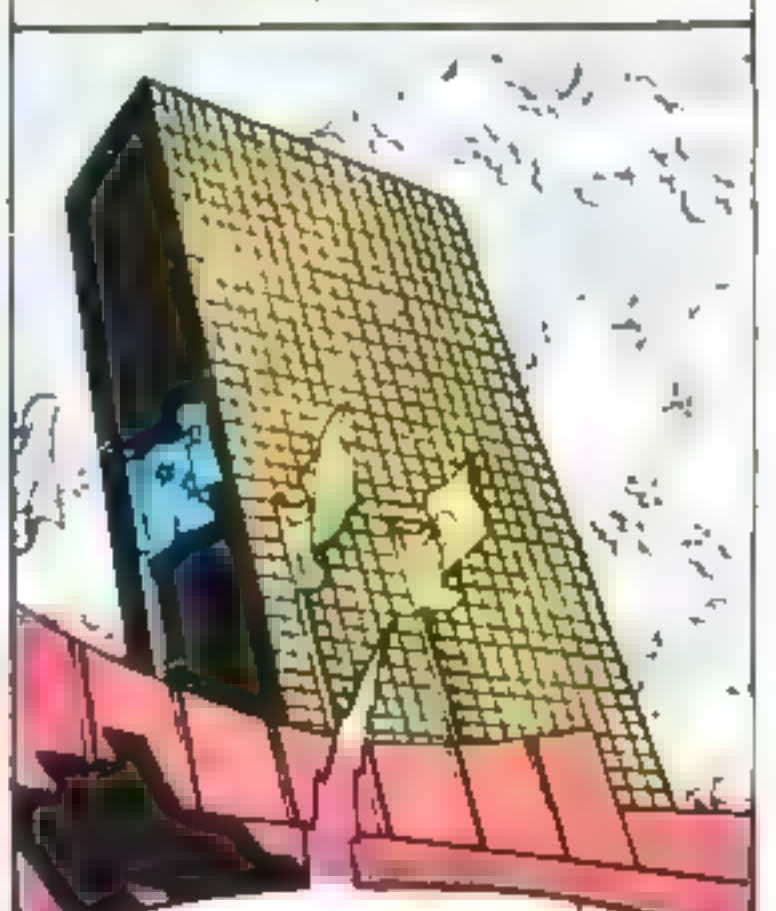
...हमको एक साथ मिलकर या तो इसका सामना करना पड़ेगा, या एक साथ खत्म हो जाना पड़ेगा।

क्या बचकानी बात है! इस वक्त हमारे पास ऐसे-ऐसे हथियार हैं, जिनसे हम *आराम* से इस *महामानव* को खत्म कर सकते हैं।

जरूर कर सकते हैं, सर! अगर हमारे हथियार उस तक पहुंच सकें तो।

वह महामानव अद्भुत मानसिक शक्तियों का स्वामी है। वह किसी भी हथियार को, अपने तक पहुंचने से पहले ही नष्ट कर सकता है।...

...और अगर वह चाहे तो पूरी पृथ्वी को भी एक ही बार में नष्ट कर सकता है।

इस समय हमको ताकत से नहीं, बल्कि अक्ल से काम लेना होगा। और मिलकर वह रास्ता खोजना होगा, जिससे हम महामानव को रोक सकें।

तुम जाओ! और जाकर वान को तुरंत मेरे पास भेज दो। ...
...और पूरी दुनिया पर राज करने के लिए तैयार रहो। हाहाहा
और कुछ ही घंटे बाद- उत्तरी ध्रुव पर स्थित, एक मृत ज्वालामुखी के मुहाने पर खड़े *महामानव* को खतरे का आभास हुआ-
मेरा मस्तिष्क खतरे की तरंगें ग्रहण कर रहा है। पर क्यों? क्या मुझपर कोई हमला होने वाला है?

और तभी-क्षितिज पर एक लड़ाकू सुपरसोनिक जेट विमान उभरा-
ओह! तो ये पृथ्वीवासी कीड़े मुझे खत्म करना चाहते हैं। अब तो इनको *सबक* देना ही पड़ेगा।

और हमला शुरू हो गया। लेकिन यह घातक हमला महामानव के लिए एक खेल से ज्यादा कुछ नहीं था-
ही ही ही ही ही।

और वह ज्यादा देर खेलने के मूड में भी नहीं था-
उसके मस्तिष्क से एक घातक मानसिक तरंग निकली।
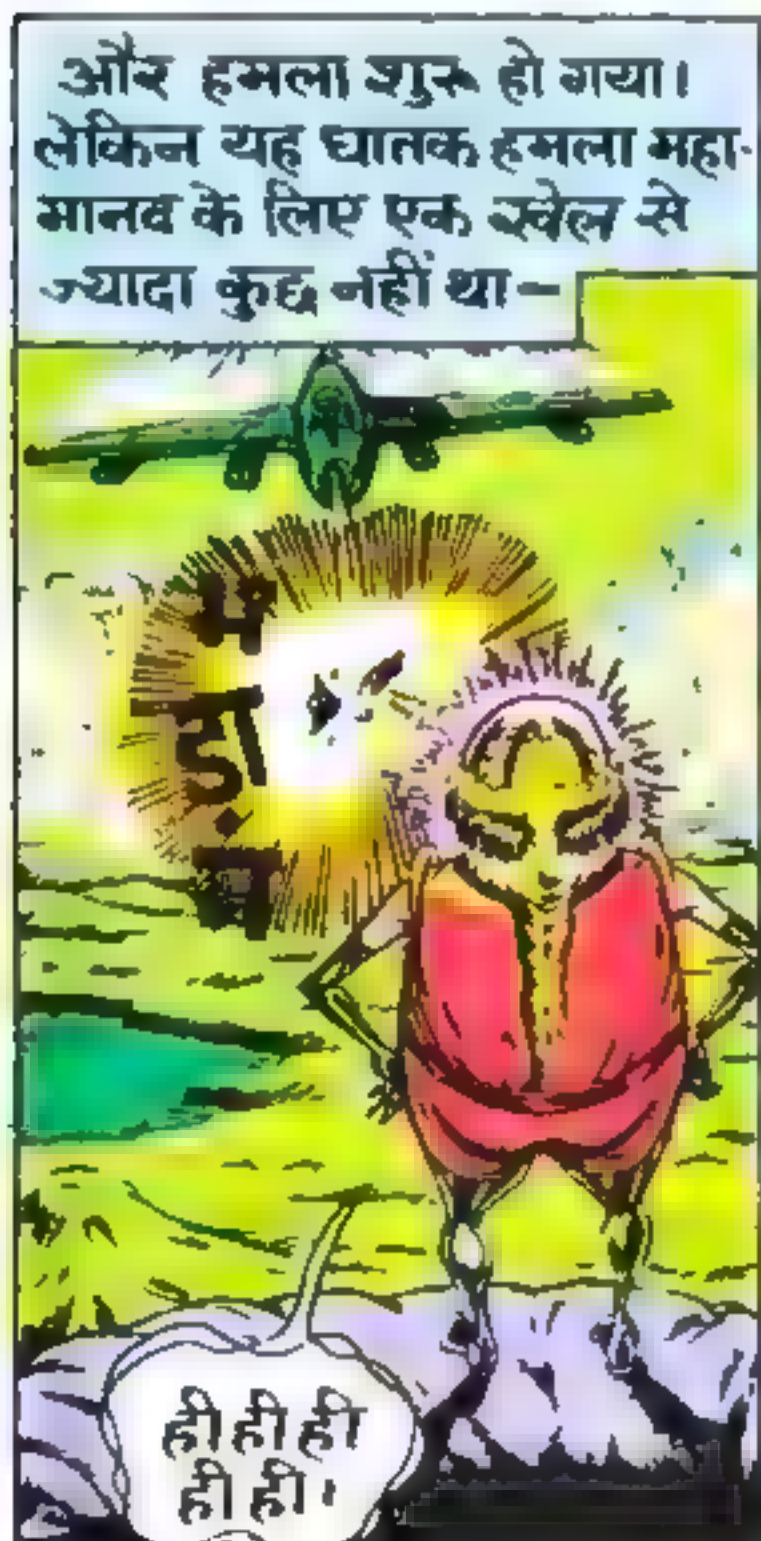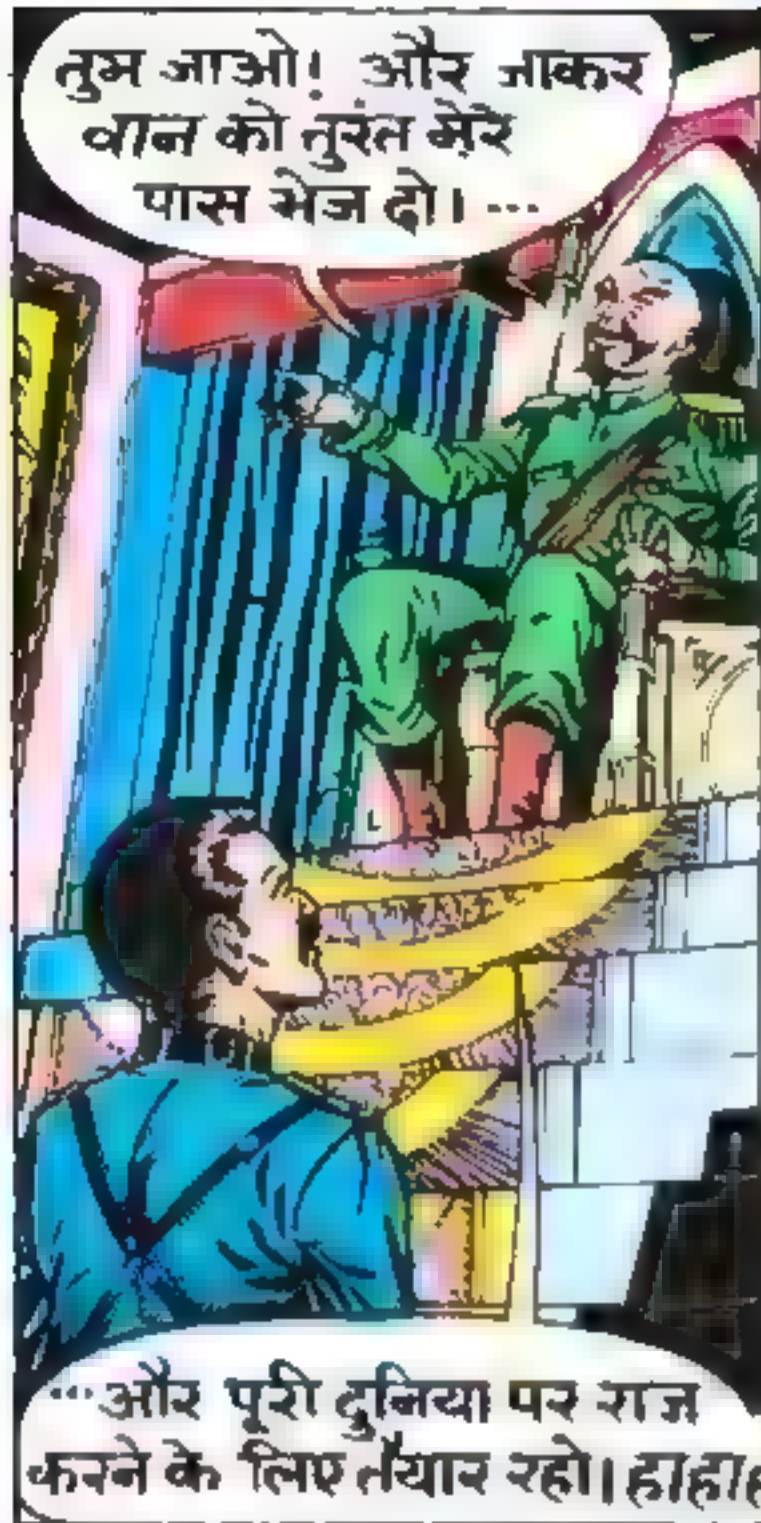
और ठीक उसी वक्त-
जल्दी, वान! इस समय महामानव का पूरा ध्यान हमारे रोबोट चलित लड़ाकू जेट यान पर है।
कहीं पर एक बटन तेज़ी से दबा।

महामानव की मानसिक तरंग, और सेटेलाइट से निकली नीली ब्रेनवाश किरण लगभग एक ही साथ अपने-अपने निशाने पर पहुंचीं–
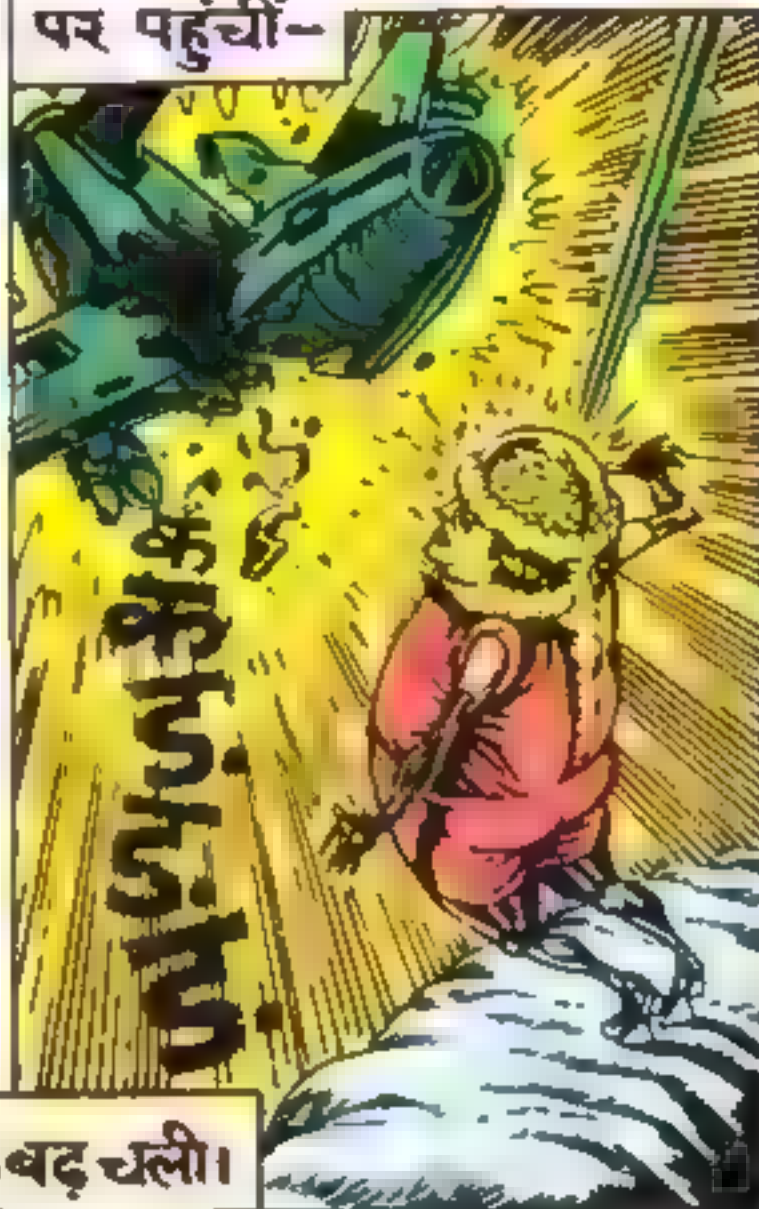
और दो मिनट बाद जब हेलीकॉप्टर दक्षिण की तरफ उड़ा तो महामानव का शरीर उस में मौजूद था–
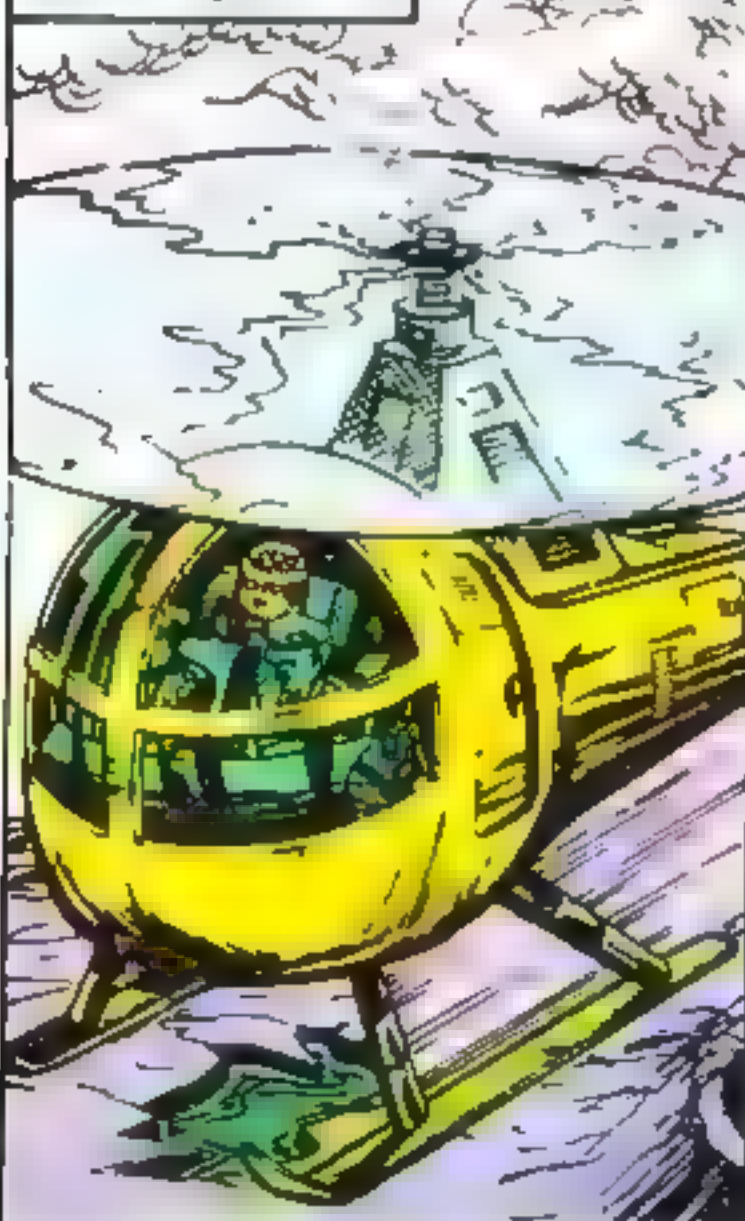
पूरी रील देख चुकने के बाद-
इन जहाजों पर ऐसा कोई निशान नहीं है, जिससे यह पता चल सके कि ये किस देश के हैं।
अब हम इंतजार के अलावा और कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

महामानव का जिसने भी अपहरण किया है, सर, उसने बहुत बड़ी गलती की है। महामानव को बांध कर रख पाना असंभव है।
लेकिन इस अपहरण को देख कर मुझको वह आइडिया आ रहा है, जिससे इस महामानव को रोका जा सकता है।
और कहीं दूर- महामानव एक खतरनाक हथियार बनने जा रहा था-
यह होश में तो नहीं आ जाएगा, वान?
नहीं, महामहिम! हमने इसको ब्रेनवाश किरण की जो मात्रा दी है, उससे तो एक पूरे शहर को जिंदगी भर के लिए ब्रेनवाश किया जा सकता है।

और फिर, ये 'स्पेशल हारमोन्स' इसके दिमाग में प्रविष्ट होने के बाद इसका अपने दिमाग पर कोई वश नहीं रहेगा।
इसके बाद यह महामानव सिर्फ आपका ही आदेश मानेगा, महामहिम!

ही ही ही! सच?
तो जल्दी लगाओ। देर क्यों कर रहे हो?
लेकिन वान को महामानव की मानसिक शक्तियों का कतई अंदाज नहीं था।

क्योंकि महामानव का मस्तिष्क जाग रहा था। और उसको पूरी स्थिति समझने में क्षण भर भी नहीं लगा-
ओह! तो इन मानवों ने मुझे किसी प्रकार अचेत करके बंदी बना लिया है!?
और फिर कमरे में तूफान फट पड़ा।

वान का इंजेक्शन वाला हाथ कंधे से उखड़कर दूर जा गिरा–

अब तानाशाह की बारी थी।
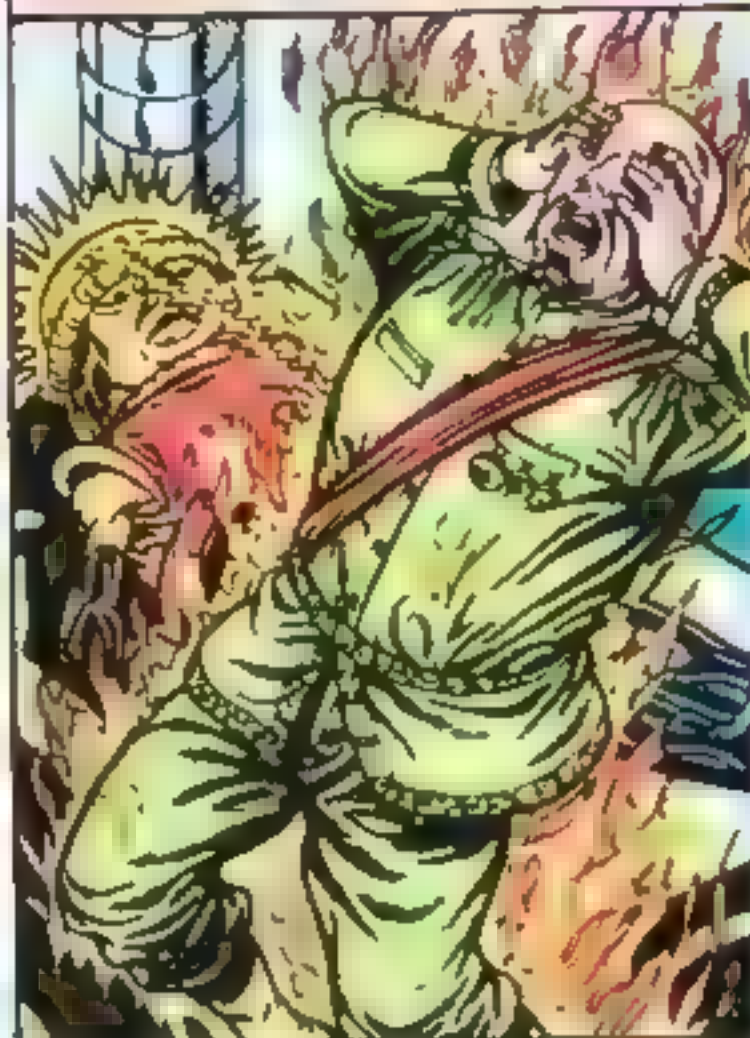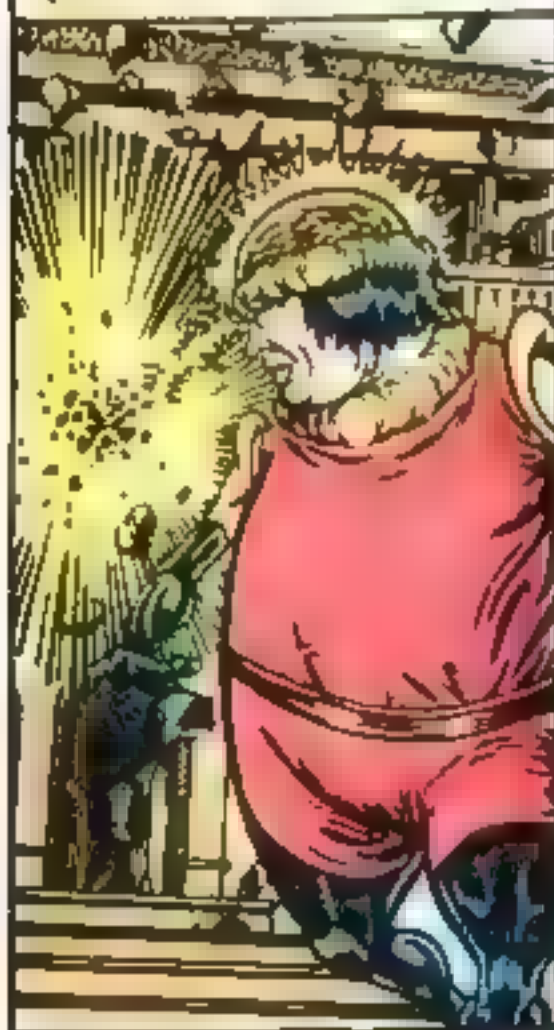
और इससे पहले कि इमारत का मलबा पूरी तरह से गिर पाता–

महामानव ने ऊपर की तरफ देखा–

परंतु महामानव का क्रोध अभी शांत नहीं हुआ था–

इन मानव कीड़ों को ऐसा सबक देना चाहिए जिससे ये मुझपर दोबारा हमला करने का साहस न कर सकें।

महामानव के हाथ हवा में उठे-
और देखते ही देखते आसमान का रंग काला हो गया-
उसमें से एक भयंकर बवंडर नीचे धरती पर उतरा।

और निर्दोष नागरिकों पर कहर बनकर टूट पड़ा। इमारतें ताश के पत्तों के घरों की तरह ध्वस्त होने लगीं। ट्रकों जैसे भारी वाहन भी कागज के हवाई-जहाजों की तरह हवा में उड़ने लगे-

समुद्र से उठती सौ-सौ फुट ऊंची लहरों ने तटवर्ती इलाकों में तांडव मचा दिया-

ओह! एकदम से गर्मी हो गई है। मेरा मस्तिष्क धीरे धीरे सुन्न हो रहा है।
मुझको ठंडक चाहिए। ठंडक...ठंडक। हा हा हा हा हा!!
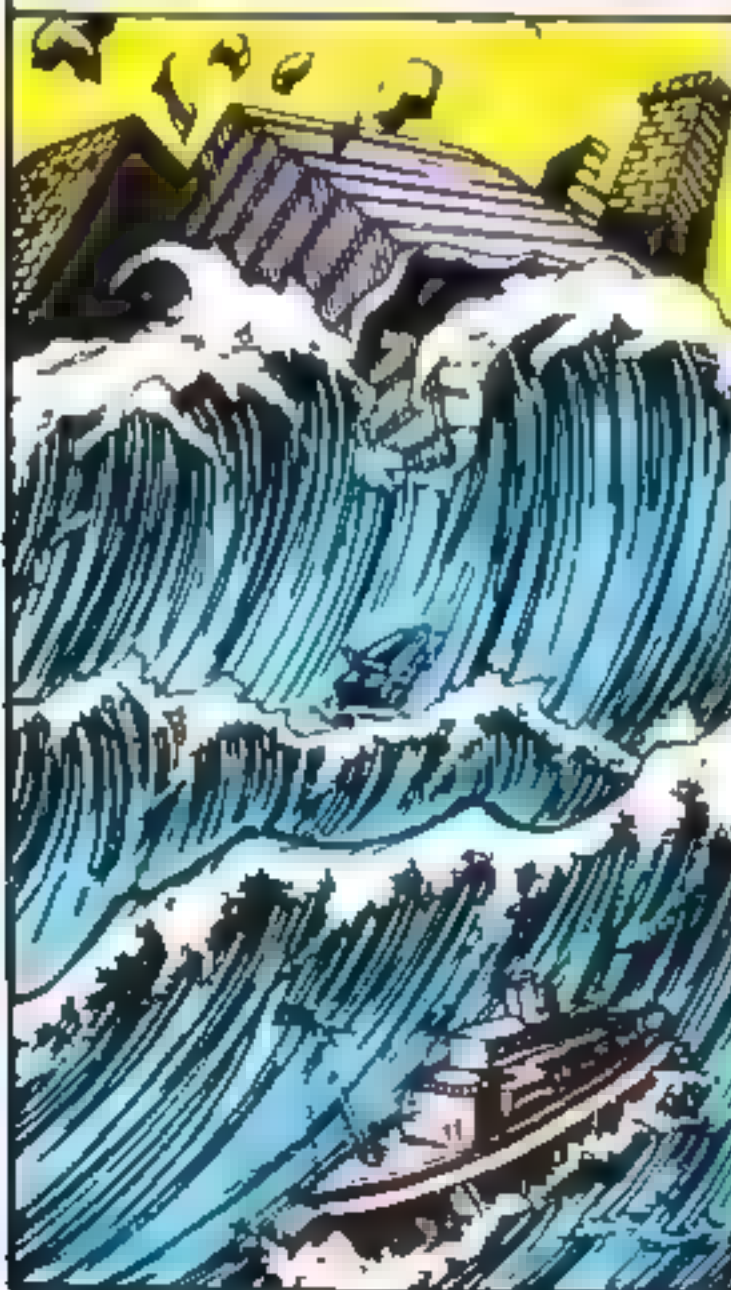
और एकाएक आसमान की रंगत सफेद हो गई। धुंध की पर्तों के अंदर से बर्फ के गोले गिरने शुरू हो गए-
बवंडर से बेघर हुए नागरिक खून जमा देने वाली बेसमय ठंड से नीले पड़ने लगे।
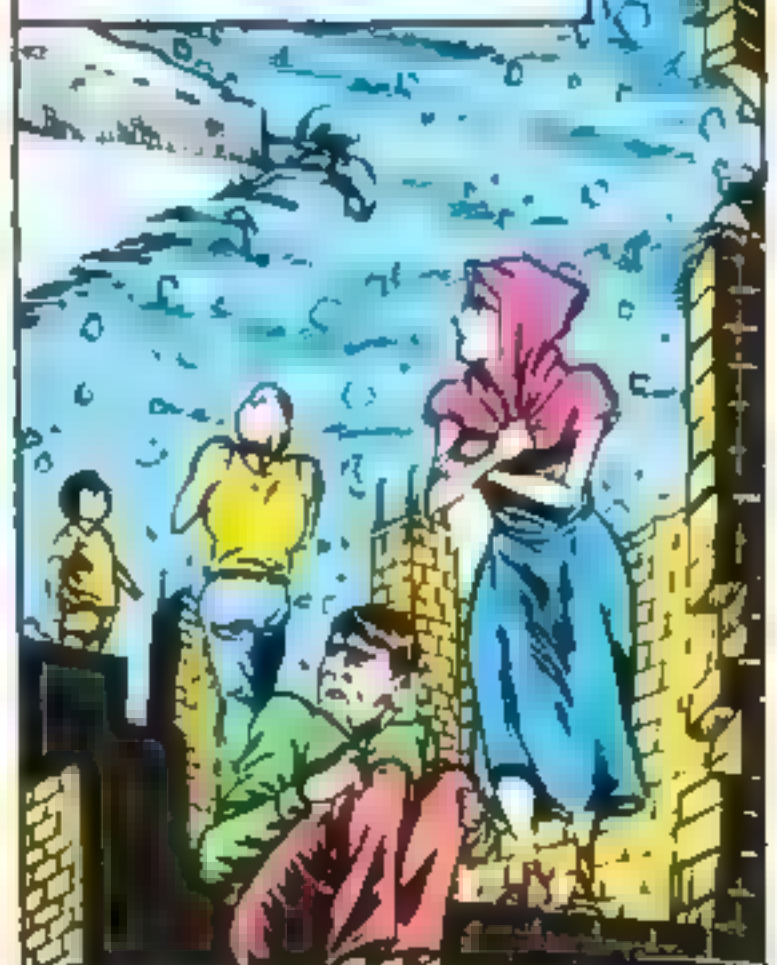
संयुक्त राष्ट्र में यह खबर पहुंचते देर नहीं लगी—
आइए, सर! हमने महा-मानव का पता लगा लिया है।
सच?
लेकिन उसने चारों तरफ तबाही फैला दी है, सर! हमारी वीडियो स्क्रीन पर धूल और धुएं के अलावा कुछ नहीं दिख रहा है।

और फिर कम्यूनिकेशन रूम में—
ओह! वही हुआ जिसका मुझे डर था।
महामानव को इस अपहरण ने इतना क्रोधित कर दिया है कि अब उसको विनाश के अलावा और कुछ भी नहीं सूझ रहा है।

हमारे पास वक्त नहीं है, सर! इस मुसीबत को अब भी अगर न रोका गया, तो फिर कोई जिंदा नहीं बचेगा। मुझे तुरंत जाना होगा।
महामानव के अपहरण से आइडिया लेकर तुमने जो प्लान बनाया है, ध्रुव, वह है तो बहुत बढ़िया। लेकिन...

लेकिन क्या, सर?
लेकिन इसमें तुम्हारी जान को भी खतरा हो सकता है।
अब हमारे पास कोई और फूल प्रूफ योजना बनाने का वक्त नहीं है। और फिर, जहां अरबों जानें दांव पर लगी हों, वहां पर मेरी एक जान की क्या कीमत है?

और पांच मिनट बाद—ध्रुव ने अपनी योजना पर अमल शुरू कर दिया—
महामानव! ...
महामानव! यह विनाश रोक दो। ...
मैं पृथ्वीवासियों का संदेश लेकर तुमसे मिलने आ रहा हूं।

और वहां से हजारों कि०मी० दूर विनाश फैला रहा महा-मानव एकाएक ठिठक गया—
.. तुम तुरंत मुझे वहीं उत्तरी ध्रुव पर स्थित मृत ज्वालामुखी के मुहाने पर मिलो।
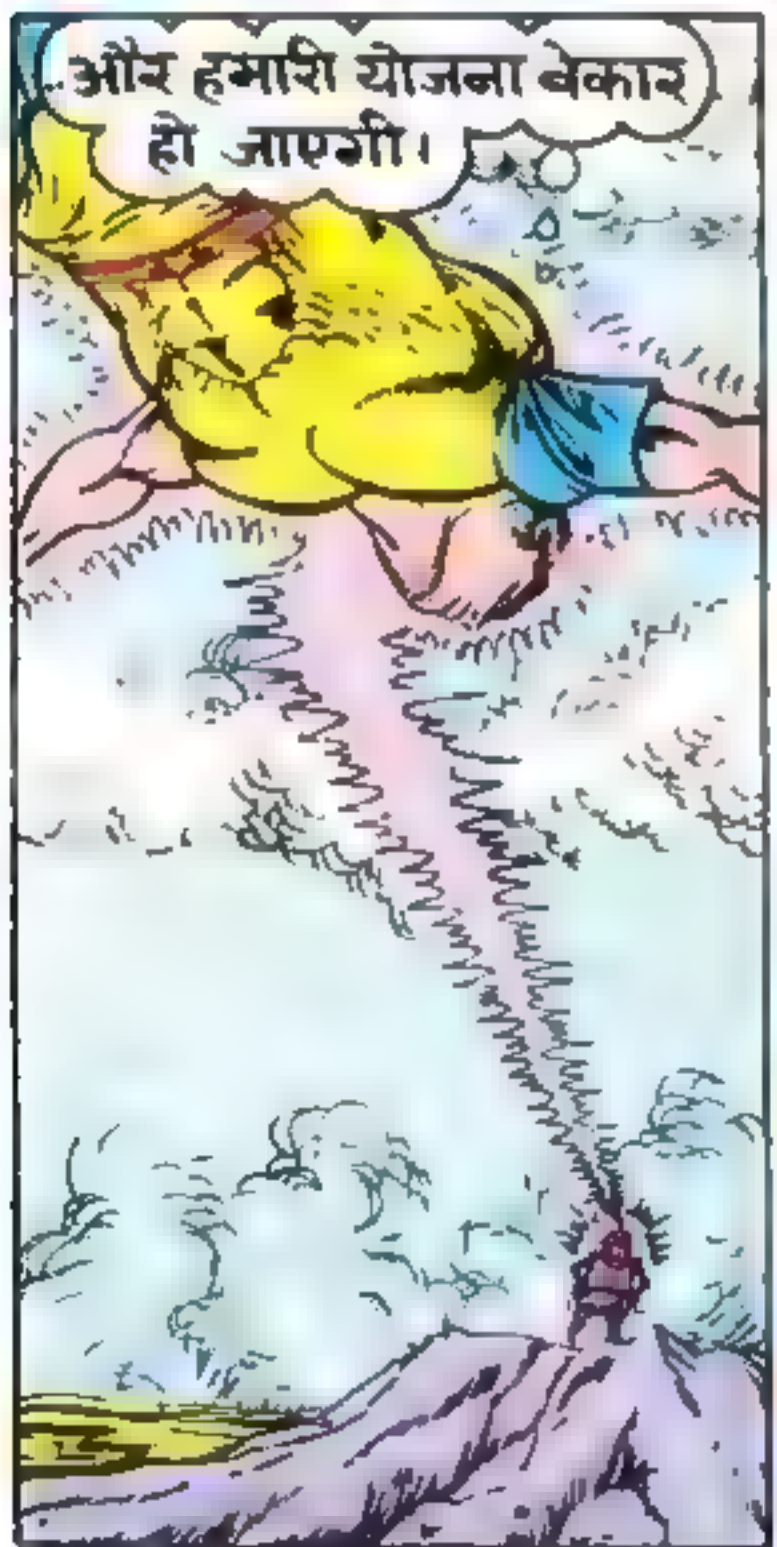
ठीक है, मानव! मैं तुमको स्वयं ही बुला रहा हूं। परंतु ध्यान रखना, अगर तुमने कोई चालाकी करने की कोशिश की, तो पूरी मानव जाति पछताएगी।

और अगले ही पल- एक रोशनी के घेरे ने ध्रुव को हवा में उठा लिया-
बेस्ट ऑफ लक, ध्रुव!
!
हम लोग यहां पर एकदम तैयार हैं।

ध्रुव का शरीर तेजी से उत्तरी ध्रुव की तरफ बढ़ने लगा-
अगर मैं अपने दिमाग को एकदम शून्य रखूं, तो महामानव मेरे विचार नहीं पढ़ पाएगा।
वर्ना अगर उसने मेरे विचार पढ़कर हमारी योजना जान ली, तो वह सतर्क हो जाएगा।...

...और हमारी योजना बेकार हो जाएगी।

कहो, मानव! पृथ्वीवासी क्या चाहते हैं? मुझसे सहयोग करके अपना विकास, या मुझे क्रुद्ध करके अपना *विनाश*? लेकिन...लेकिन!!!
और यहीं ध्रुव से चूक हो गई।

...लेकिन मैं तुम्हारा दिमाग नहीं पढ़ पा रहा हूं। क्योंकि तुम्हारा दिमाग एकदम *विचार-शून्य* है। पर क्यों? यानि तुम मुझसे कुछ छिपाना चाहते हो।
ध्रुव समझ गया कि गड़बड़ होने वाली है। वह आगे लपका।

अगर मैं चाहूं तो तुम्हारे मस्तिष्क को नष्ट करके तुम को एक पल में नष्ट कर सकता हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम मानवों को, अपनी योजना के कारण, अपनी आँखों से मरते देखो।

और अब मैं यह देखना चाहता हूं कि तुमने मुझे मारने के लिए क्या योजना बनाई है?

–और दूसरी तरफ–सारा काम ध्रुव की योजना के अनुसार ही हो रहा था–

समय हो गया है, जनरल! मिसाइलें छोड़ो।

एक बटन दबा।

और अलग-अलग सैनिक-अड्डों से चार न्यूक्लियर मिसाइलें उत्तरी ध्रुव की तरफ बढ़ने लगीं–
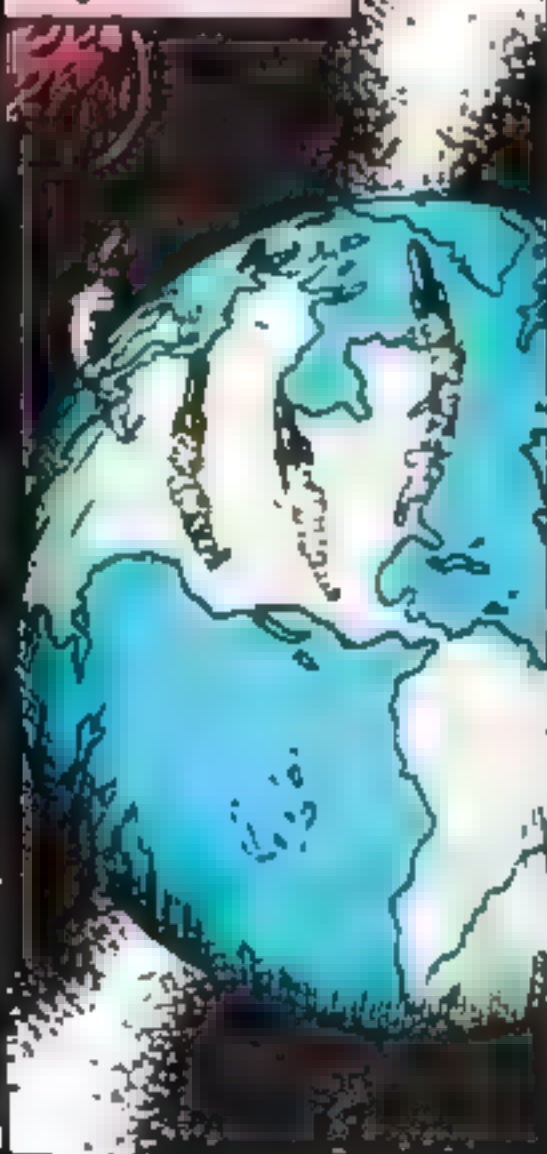
महामानव को तुरंत ही इस आने वाले खतरे का आभास हो गया–

हा हा! तो तुम्हारी योजना मुझे मिसाइलों से खत्म करने की थी। क्यों?

अब तुम मेरी योजना देखो।

ही ही ही। अब ये मिसाइलें मानवों की बस्ती में वह तबाही मचाएंगी, जिसे तुम सब हमेशा याद रखोगे।

लेकिन मुझे अपने शरीर को इंच भर भी हिलाने के लिए अपनी पूरी इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है।...
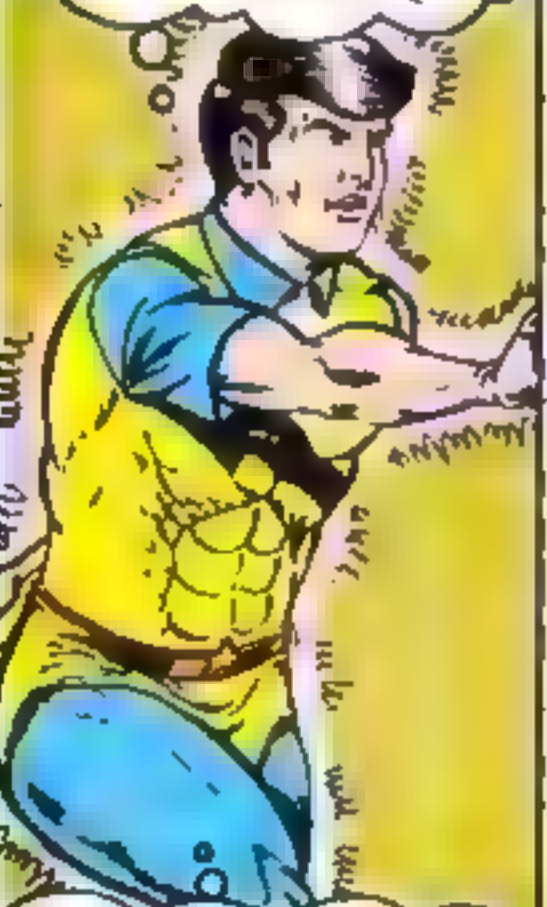
और मेरा दिमाग मुझे अपनी उंगलियां तक हिलाने नहीं दे रहा है।

और कहीं दूर पर एक मिसाइल प्रशांत महासागर में स्थित एक निर्जन द्वीप पर गिरी–

उस द्वीप का नामोनिशान तक मिट गया।
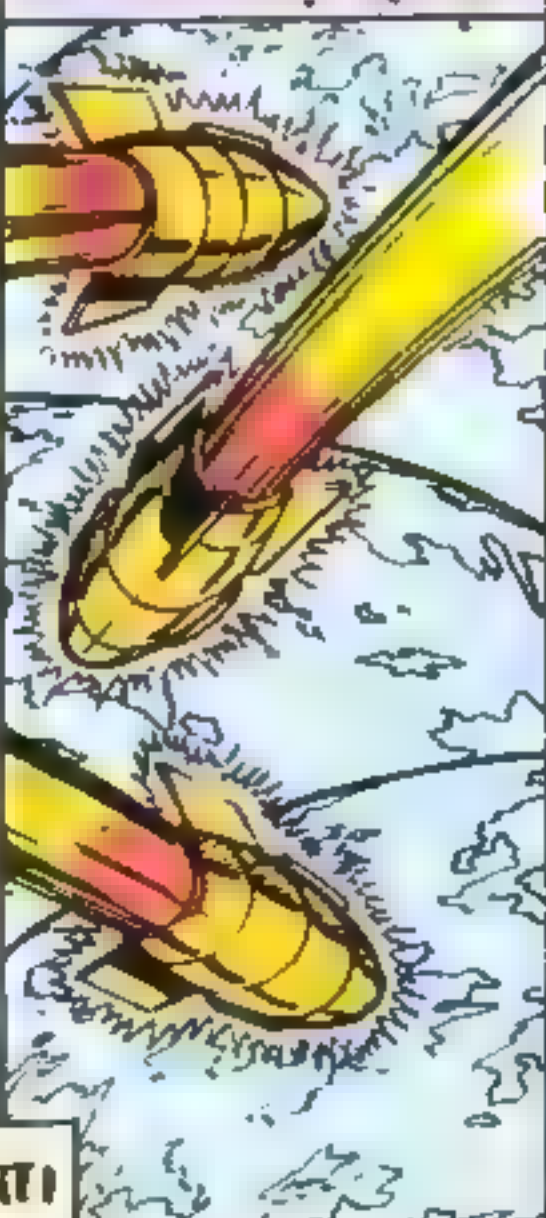
तबाही और मौत सिर्फ कुछ ही मिनटों की दूरी पर थीं –

दूसरी तरफ- अपनी इच्छा शक्ति को एकत्रित कर रहे ध्रुव के चेहरे से पसीने के नाले बह रहे थे-
और आखिरकार- उसकी मुट्ठी खुल गई।

और टेनिस की गेंद जितना बड़ा, एक काला गोला सदियों से सोए ठंडे ज्वालामुखी के अंदर तेजी से गिरने लगा-
काला गोला- जो वास्तव में एक मिनी परमाणु बम था।
और कुछ ही क्षण बाद ज्वालामुखी के अंदर एक जबरदस्त धमाका हुआ-

गर्म लावे को दबाने वाली भारी पत्थरों की मोटी पर्त के टुकड़े टुकड़े हो गए-
और दहकता लावा तेजी से ऊपर बढ़ने लगा।
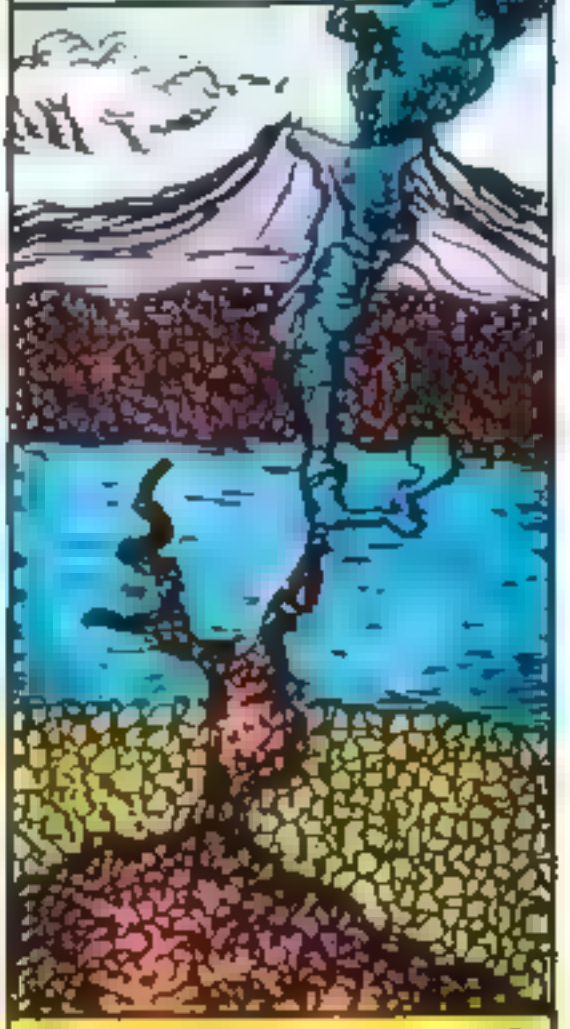
ज्वालामुखी के आस-पास का तापमान बढ़ने लगा-
!
और महामानव को वातावरण गर्म होता महसूस हुआ।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ने लगी, महामानव का दिमाग बेहोशी में डूबने लगा-
य... यह क्या!? ज्वालामुखी तो फटने वाला है। मुझे... मुझे अपनी मानसिक तरंगों द्वारा इसे फटने से रोकना चाहिए।

लेकिन... फिर मिसाइलों पर... मेरा नियंत्रण नहीं रहेगा। ओह... मैं क्या करूं?
आहा! मुझपर इसकी पकड़ ढीली हो रही है। यही वक्त है।

अभी नहीं, तो कभी नहीं।
ध्रुव ने अपनी इच्छा शक्ति को एक बार फिर इकट्ठा करना शुरू किया।

और वह मानसिक कैद से आजाद हो गया—

अब वक्त बहुत कम था। ध्रुव का हाथ तेजी से घूमा—
और महामानव के पैर जमीन से उखड़ गए।

उसका शरीर एक बार फिर दहकते ज्वालामुखी के गर्भ में गिरने लगा। करोड़ों वर्ष पुराना दृश्य दोहराया जा रहा था—
महामानव के दिमाग पर छाई बेहोशी और गहरी होने लगी।

परंतु इससे पहले कि उसका पूरा मस्तिष्क बेहोशी की गिरफ्त में कैद हो पाता, उसने अपने शरीर को मानसिक सुरक्षा का कवच पहना दिया—

और उसी क्षण - ज्वालामुखी फट गया। एक जोर का धमाका हुआ। पृथ्वी के गर्भ से हजारों टन पत्थर और राख आकाश को छूने लपके—
भड़ड़ड़ड़ड़ड़
और महामानव का बेहोश मगर सुरक्षित शरीर हजारों टन भारी पत्थरों के नीचे दब गया।

और ऊपर - ध्रुव ने मानव जाति को तो बचा लिया था, परंतु उसका स्वयं बच पाना मुश्किल था—
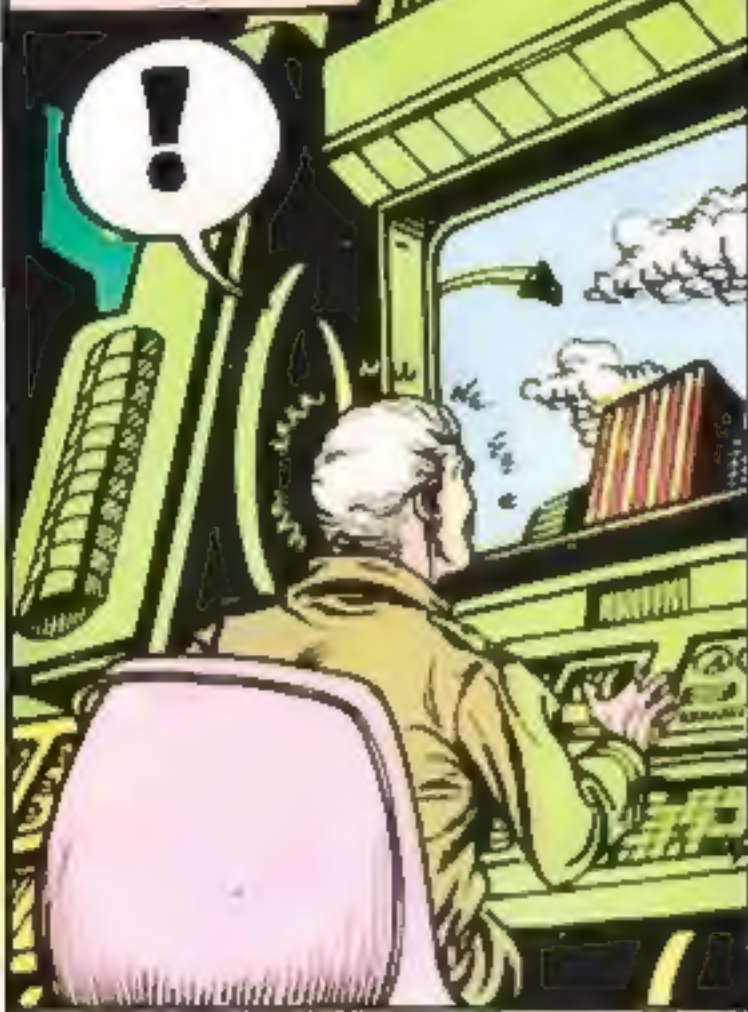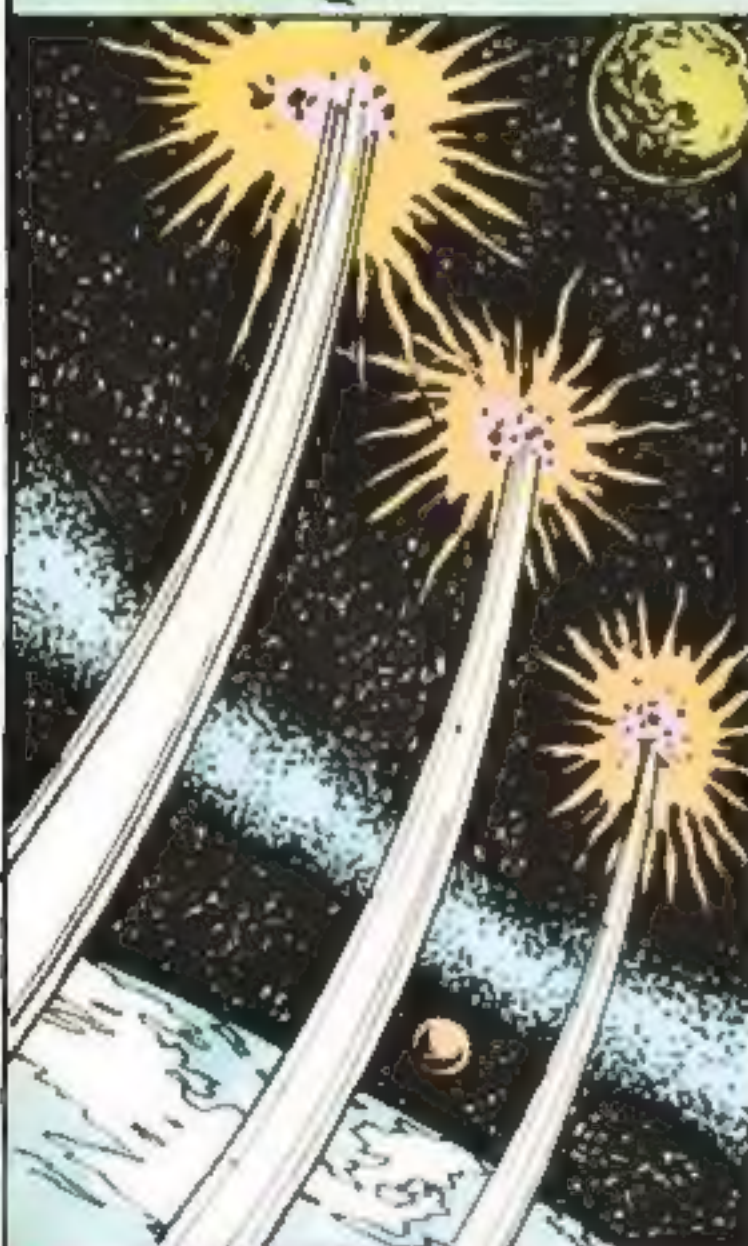
और आखिरकार- ध्रुव के पैरों के नीचे की बर्फ की सतह ने जवाब दे दिया–

ओह! मुझे इसी बात का डर था।

तड़क!

इतने ठंडे पानी में तो मेरा इलेक्ट्रॉनिक यंत्र भी मेरे शरीर को गर्म नहीं रख पाएगा। मेरे हाथ-पैर तो अभी से सुन्न हो रहे हैं।
खून का दौरा भी रुकता सा महसूस हो रहा है।... पर मैं यहां से बाहर भी तो नहीं निकल सकता।...

क्योंकि गर्म लावा चारों तरफ से मेरी ओर ही आ रहा है। अब थोड़ी देर में मेरे दिल की धड़कन भी बंद हो जाएगी।
लगता है कि आज मेरा अंत आ ही गया।

लेकिन किस्मत भी बहादुरों का ही साथ देती है—
कर्नल, वह रहा ध्रुव। वह ठंडे पानी में गिरा हुआ है।
ओ माई गॉड! तुरंत रस्सी को नीचे लटकाओ।

अपनी आधी चेतना में ध्रुव को महसूस हुआ कि दो हाथ उसको सर्द पानी से बाहर निकाल रहे हैं—

और पांच मिनट बाद- गर्म कंबल में लिपटा ध्रुव गर्मागर्म काफी की चुस्कियां ले रहा था—
मैंने कई लड़ाइयां लड़ी हैं, ध्रुव, लेकिन तुम्हारे जैसा जांबाज कभी नहीं देखा। मैं तुमको सेल्यूट करता हूं।

आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं, सर। मुझे पूरा यकीन है कि अगर मेरी जगह आप होते, तो आपने भी ऐसा ही किया होता।
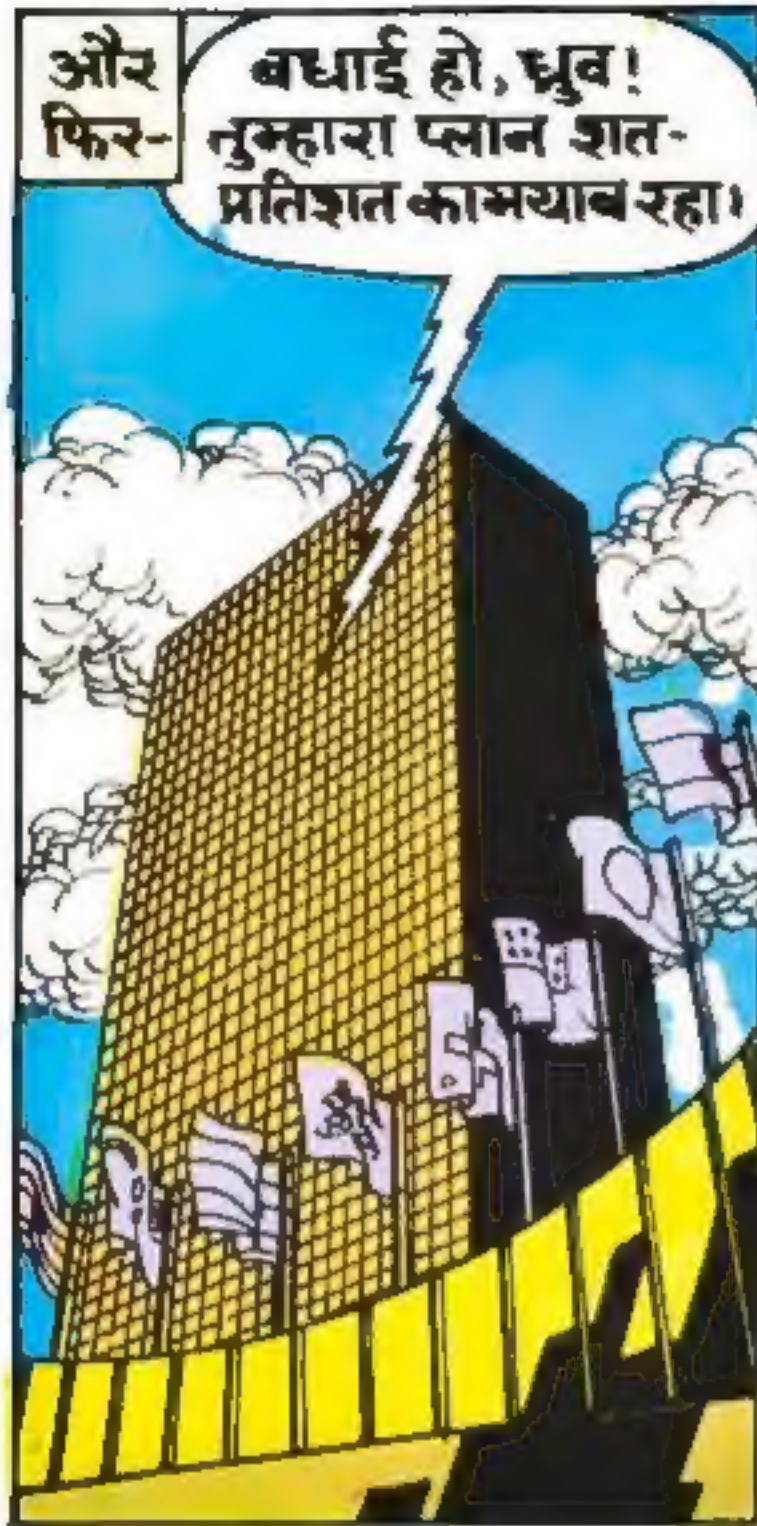
और फिर-
बधाई हो, ध्रुव! तुम्हारा प्लान शत-प्रतिशत कामयाब रहा।

शत प्रतिशत तो नहीं, सर! क्योंकि मेरा प्लान था कि महा-मानव का दिमाग मिसाइलों में उलझा रहेगा, और इस बीच मैं अपना काम कर लूंगा।
लेकिन महामानव चूंकि सतर्क था, इसी लिए वह मेरा प्लान काफी हद तक समझ गया था!--

पर पूरा प्लान नहीं। क्योंकि सौभाग्यवश वह अंत तक यही समझता रहा कि हम उसको मिसाइलों से ही खत्म करना चाहते हैं।
और यहीं वह मात खा गया।

वैसे उस डायनासोर के क्या हाल हैं?
हमें दुःख है कि हम उसे बचा नहीं सके।

लेकिन उस डायनासौर के लिए अमेरिकी सरकार ने एक नया म्यूजियम बनाने का फैसला किया है। जिसका नाम होगा... ध्रुव म्यूजियम।
एक ऐसे हीरो के नाम पर, जिस ने महामानव को खत्म कर के पूरी मानव-जाति को नष्ट होने से बचाया है।

यहां पर आप शायद गलत कह रहे हैं, सर!...
...क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि महामानव अभी भी जिंदा है।
समाप्त